श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 3 मार्च 2020 मूल्य : 20 रु.

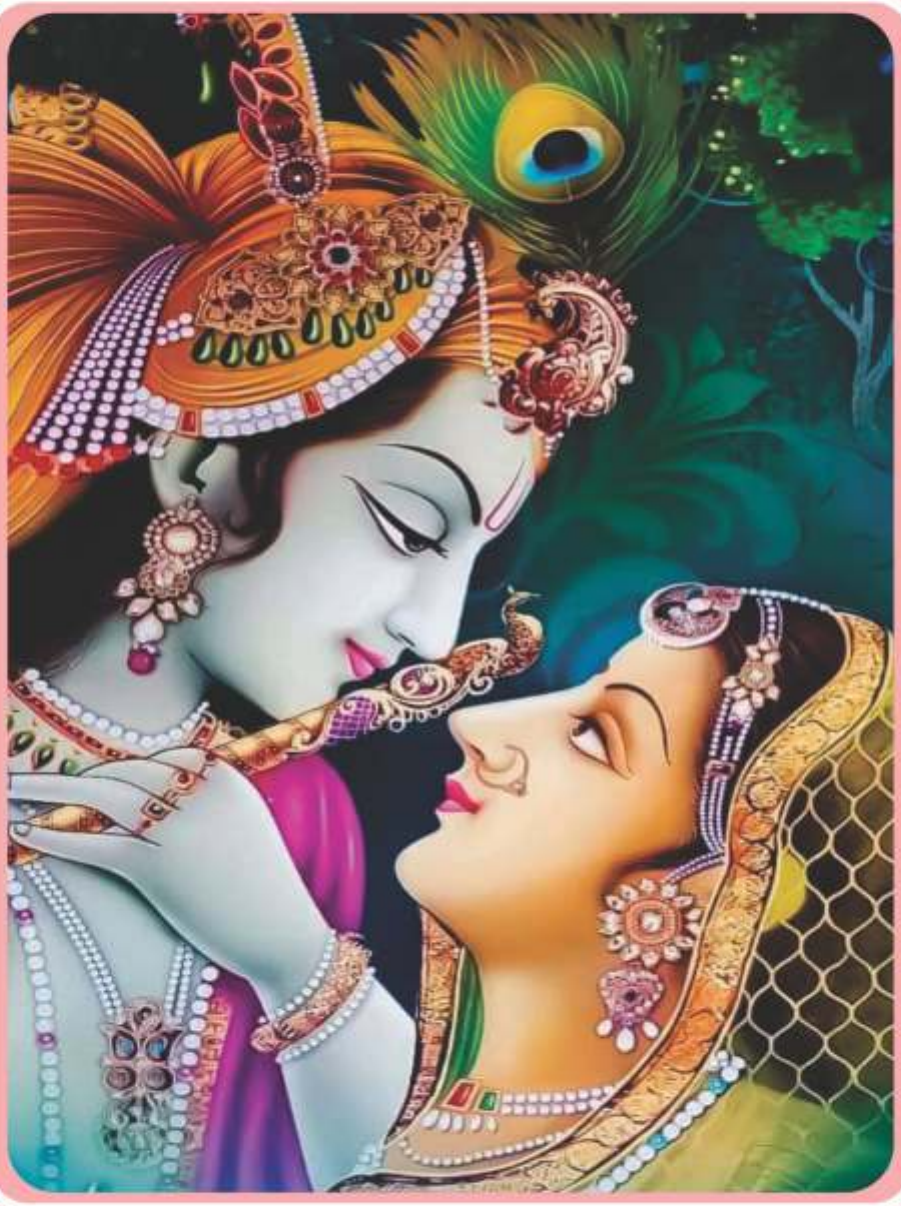

प्रकृति का सौन्दर्य गलता तीर्थ

धनावंशी भक्ति के 35 अंग

कैसी हो धनावंशी भक्ति

धनावंश और विष्णु सहस्रनाम

With best compliments from :

रामचन्द्र स्वामी
स्वामियों की ढाणी, बीदासर

Mobile : 9811685994
9873345994

LF

LIFE TIME FASHION

Mfrs. & Suppliers of : **Jeans & Cotton Pant**

IX/6398, Mukherjee Gali No 2, Gandhi Nagar,
Delhi-110031 Phone : 011-22075994

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 3 मार्च 2020 मूल्य : 20/- रुपये

बसौ मेरे नैननि में दोउ चंद।
गौर बरनि बृषभानु नंदनी, स्याम बरन नंद नंद।।
गोलक रहे लुभाय रूप में, निरखत आनंद कंद।
जै श्रीभट्ट प्रेम रसबंधन, क्यों छूटै दृढ़ फंद।।

कागद लिखै सो कागदी, कै ब्योहारी जीव।
आतम अच्छर का लिखूं, जित देखूं तित पीव।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-

अध्यात्म और पंथ की सच्ची बातें जाने/04

* समाचार-/05-07

* आलेख-

धनावंशी भक्ति के अंग/08

धनावंशियों के लिए विष्णु सहस्रनाम का महत्त्व/11

प्रकृति के सौन्दर्य में समाया गलता तीर्थ/14

कैसी हो धनावंशी भक्ति/23

वास्तु एक विवेचन/25

दहेज प्रथा एक अभिशाप/26

कालचक्र/27

* विशद परिचर्चा

मृत्यु बैठक पर भारी उपस्थिति कितनी जायज/19

* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

अध्यात्म और पंथ की सच्ची बातें जाने

विचार

धनावंश की आध्यात्मिक उन्नति और समाज की प्रगतिगामी चेतना का आधार हमारा यह विश्वास ही उपयोगी हो सकता है कि हम सब धनावंशी हमारे धर्म और पंथ गुरुजी धनाजी के अनुयायी हैं । जो इस बात से हट कर कुछ सोचता है। मेरी राय में वह कभी भक्ति साहित्य नहीं पढता । उसकी भक्ति काल में उत्पन्न हुए धार्मिक पंथों के बारे में शून्य जानकारी है । धार्मिकता के संस्कारों के लोप होते जाने के कारण ही हमारे बतीस धनावंशी महंत द्वारे मिट गए अथवा बंद जैसे हो गए । इसे घोर दुर्भाग्य जानना चाहिए कि महंत द्वारों में हमारे पंथ से सम्बन्धित सारी तथ्यात्मक जानकारियां और साहित्य मिलना चाहिए था । जो तीन द्वारे अभी खुले हैं, वहां भी कोई सामग्री नहीं है ।ऐसा अज्ञानता का खेल केवल धनावंश में ही चल सकता। धर्म, अध्यात्म और पंथ की सच्ची सच्ची बात नहीं जाने, तो फिर वह महंत ऐसी बातें कब जानेगा ? हमारे मौजूदा महंतों में अपने पंथ के बारे में जानने या खोज करने की कोई दिलचस्पी भी नहीं है । ऐसी खराब स्थिति से गुजर रहा है, हमारा पंथ। जब इसके अग्रणी लोगों में धार्मिक भाव नहीं है, तो यह किस प्रकार का धार्मिक सम्प्रदाय है ? गंभीरता से सोचने की बात है कि दूसरे धार्मिक सम्प्रदाय हमारी बात तभी सुनेंगे, जब हम अपने पंथ के सम्बन्ध में विद्वतापूर्ण बात करें ।अनपढ और जाहिल लोगों को कोई अपने पास नहीं बैठाता । हमने आज तक कोई बड़ा धार्मिक सम्मेलन इसलिए नहीं किया क्योंकि पंथ सम्प्रदाय के सम्बन्ध में बुद्धिमतापूर्ण ढंग से बात कहनेवाला हमारे पास न सामाजिकों में और न ही महंतों में कोई एक भी व्यक्ति है । ऐसे कब तक चलेगा ? खाली रुपये के मद या थोथे अहंकार से समाज आगे कैसे बढेगा ? किसी भी समाज में सब लोग अपने समाज के ज्वलंत प्रश्नों पर विचार करनेवाले नहीं होते, पर कुछ लोग तो होने चाहिए न? भाइयों ईमानदारी से इन बातों पर विचार कीजिए ।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

प्रिय धनावंशी बंधुओं
जरा गौर करें ।

किसी भी समाज के वे ही लोग उल्लेखनीय होते हैं, जो समाज के हित में समय, अपना परिश्रम और अपनी गाढी कमाई का धन खर्च करते हैं । समाज को देने के लिए जिसके पास इन तीनों में से एक भी चीज नहीं है, उनसे समाज को कोई सरोकार नहीं रहता। अन्य स्वामी समाजों की तुलना में धनावंश बहुत पीछे है, इसका एकमात्र कारण यह है कि हमारे लोगों ने तत्परता से समाज के लिए समय नहीं दिया और श्रम भी नहीं किया । धन तो तीसरे स्थान पर आता है, जहां अन्य समाज के पास अपनी उपलब्धि की ढेरों चीजें हैं, वहां हमें बगलें झांकनी पड़ती है । कल की बात कल गई । आज हमारा समाज समय और श्रम के साथ धन भी खर्च करने में सक्षम है । जरूरत नियोजित ढंग से और एक साथ मिलकर काम करने की है । मनुष्य के पतन का मुख्य कारण होता है, उसका ईर्ष्याभाव । समाज की रचना में ईर्ष्या की कोई ठौड़ नहीं होती । समाज में व्यर्थ बातें करने वाले समाज के शुभचिंतक नहीं होते । आइए, शुभ भाव से धनावंश के निर्माण का संकल्प ग्रहण करें । आप समाज को जो समर्पित कर सकते हैं, वह अवश्य करें । चुप और एकाकी होकर बैठनेवालों के समाज आगे नहीं बढते ।

सारी उम्र बस एक ही सबक याद रखना, दोस्ती और दुआ में नीयत साफ रखना।

समाचार

श्री धनावंशी स्वामी समाज के पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी महाराज की 605वीं जयंती भक्ति भाव से मनाई गई

माघ कृष्णा अष्टमी, संवत 2076 अर्थात 17 जनवरी 2020 को धनावंशी स्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री धनाजी महाराज की 605वीं जयंती श्रद्धा और भक्ति भाव पूर्वक समूचे राजस्थान में मनाई गई।

श्रीडूंगरगढ़। यहां कालूबास के राधाकृष्ण मंदिर प्रांगण में माघ कृष्णा अष्टमी के दिन धनावंशी स्वामी समाज के पंथ प्रवर्तक धनाजी महाराज की जयंती मनाने का कार्यक्रम चला। श्री धनावंशी हित पत्रिका के सम्पादक डॉ. चेतन स्वामी ने धनाजी की प्रतिमा के समझ दीप प्रज्वलित कर तथा पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि धनाजी में भक्ति के नैसर्गिक संस्कार थे। उनकी भक्ति के प्रसंगों को सभी भक्तमालों में बड़ी प्रमुखता से स्थान दिया गया है। गुरु रामानंदाचार्य की आज्ञा से उन्होंने जाट जाति के अपने अनुयायियों को भक्ति की ओर से उन्मुख किया, उन्हें साधपन सेवित करने का उपदेश दिया। उनके सभी अनुयायी धनावंशी स्वामी कहलाए और एक नए भक्ति पंथ का आविर्भाव हुआ। धनावंशियों को उन्होंने ही स्वामी शब्द प्रदान किया। तब से धनावंशी स्वामी ठाकुरजी की पूजा में संलग्न है।

चतरदासजी मंदिर में रात्रि को धनाजी महाराज की जयंती के अवसर पर पुष्पांजलि तथा कीर्तन का कार्यक्रम रखा गया। यह प्रण भी लिया गया कि एक वर्ष तक यानि अगली धनाजी महाराज की जयंती तक निरंतर प्रतिदिन एक घंटा कीर्तन का आयोजन किया जायेगा। मंदिर पुजारी घनश्यामदास ने धनाजी महाराज जैसी प्रभु भक्ति अपने भीतर अपनाने की बात उपस्थितजनों से कही। बाद में पुजारी नारायणदास की मंडली ने कीर्तन किया।

मेड़तासिटी। भगवान के परमभक्त धनाजी महाराज की 605 जयंती यहां गांधी कॉलोनी स्थित उद्यान में समारोहपूर्वक मनाई गई। धनावंशी स्वामी समाज मेड़ता के अध्यक्ष श्री बस्तीराम स्वामी ने धनाजी के चित्र पर पुष्पमाला अर्पित कर भोग लगाया। इस अवसर उन्होंने धनाजी महाराज के भक्तिपरक जीवन प्रसंग सुनाते हुए कहा कि धनाजी ने वैष्णव धर्म का प्रचार किया। उनके अनुयायी राजस्थान, हरियाणा तथा पंजाब में हैं। धनाजी की पूजा-अर्चना रामू स्वामी, श्रीकांत स्वामी, विनोद शर्मा, कमलकिशोर शर्मा तथा विवान कौशिक ने भी की। वैष्णव समाज के लोग मौजूद थे।

हरियासर (सरदारशहर)। तहसील के हरियासर गांव में धनाजी महाराज की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा स्थापित कर, बड़े भाव से पूजा-अर्चना की गई तथा पुष्प अर्पित किए गए। गत वर्ष भी हरियासर के धनावंशी स्वामियों ने सरदारशहर में धनाजी की जयंती का कार्यक्रम किया। रिटायर्ड सुबेदार जगदीशजी

कोई भी रिश्ता बनता तो विश्वास से है, किन्तु चलता बर्दाश्त से है।

स्वामी, वैद्य अर्जुनदासजी, प्रभुदासजी, ध्रुवपाल आदि सज्जनों ने धनाजी के प्रेरणीय प्रसंग सुनाए।

जोधपुर। ठाकुरजी के भक्त श्री धनाजी महाराज की 605वीं जयंती श्री धनावंशी स्वामी समाज शिक्षण संस्थान जोधपुर में हॉस्टल के पूर्व प्रबंधक श्री चतुर्भुज वैष्णव, कौशलजी वैष्णव तथा हॉस्टल के छात्रगण गणेशदास, श्रीकिशन, महेशदास, महेन्द्रदास, हरिओम, रामप्रसाद, अशोक, महावीर, ओम, राधेश्याम, सुरेद्र, वासुदेव एवं नरेन्द्रदास के साथ ठाकुरजी एवं उनके भक्त धनाजी को प्रसाद चढ़ाकर भक्त और भगवान का गुणगान किया गया। विद्यार्थियों को धनावंश के पंथ प्रणेता के सम्बन्ध में बताया गया।

दूजार। लाडनूं तहसील के गांव दूजार के ठाकुरजी मंदिर में ठाकुरजी महाराज की समवेत आरती के साथ पंथ प्रवर्तक गुरुदेव धनाजी की 605वीं जयंती उल्लासपूर्वक मनाई गई। धनाजी महाराज के जयकारे लगाए गए। उपस्थितजनों में मंदिर के पुजारी गोपालजी, श्रीधर स्वामी, राजेन्द्रजी भाकर, नारायणदास मुहाल, सोहनदासजी बिजारणिया, सुरेशजी खिलेरी, हनुमानदास मुहाल, विवेककुमार, राजकुमार, गिरधारीजी आदि 20–25 श्रद्धावान बंधु थे। सभी ने धनाजी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की।

गुसांईसर बड़ा। श्रीडूंगरगढ़ तहसील का गुसांईसर बड़ा में धनावंशी स्वामियों की बड़ी तादाद है। वहां के प्राचीन ठाकुरजी मंदिर में परिव्राजक महंत श्री सीतारामजी के सान्निध्य में धनाजी की जयंती का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ में ठाकुरजी की पूजा की गई, फिर धनाजी के बताए भक्ति पंथ पर चलने का सभी ने संकल्प ग्रहण किया। इस अवसर पर परिव्राजक ने बताया कि धनावंश समाज की एकता तथा भक्ति प्रवाह हम धनाजी के नाम पर ही संचालित कर सकते हैं। धनावंशी होकर जो धनाजी को मान–सम्मान नहीं दे रहा, वह कहीं न कहीं अपने संस्कारों को क्षति पहुंचा रहा है। धनाजी की भक्ति का स्मरण करते हुए गाजे–बाजे से लम्बे समय तक हरि कीर्तन किया गया। उपस्थितजनों में श्रीरामदास, सत्यनारायण भूकर, श्यामजी स्वामी तथा समाज के दस–पन्द्रह प्रबुद्धजन थे। यह प्रण किया गया कि आगामी वर्ष धनाजी की जयंती और अधिक धूमधाम से मनाई जायेगी तथा यहां धनाजी के मंदिर निर्माण पर भी विचार किया गया।

भरोसा टूटने की आवाज नहीं होती, लेकिन गूंज जिंदगी भर सुनाई देती है।

समाचार

श्री धनावंशी स्वामी समाज, सूरत की ओर से आयोजित चतुर्थ डीपीएल क्रिकेट प्रतियोगिता उल्लासपूर्वक सम्पन्न

सूरत के जी.बी. पटेल क्रिकेट ग्राउण्ड पर दिनांक 16 से 19 जनवरी 2020 को धनावंशी समाज की तेरह टीमों के मध्य कोमल कप के लिए मुकाबला हुआ। इस प्रतियोगिता के मुख्य प्रोयोजक कोमल फैशन, सूरत तथा उप प्रायोजक भूकर परिवार सूरत थे। चार दिनों के रोचक मुकाबले में टीम पायल ब्रादर्स विजेता रही तथा बालाजी किंग्स इलेवन टीम उपविजेता रही।

विजेता टीम के कैप्टन रमेश स्वामी को मैच समाप्ति के बाद गारबदेसर के धर्मदास थालोड़ ने ट्राफी तथा इकत्तीस हजार रुपये की नकद राशि भेंट की तथा उपविजेता टीम के कैप्टन केशव स्वामी को ट्राफी व पन्द्रह हजार रुपये की राशि श्री बृजदास-गणपतदास स्वामी ने प्रदान की।

चतुर्थ डीपीएल क्रिकेट प्रतियोगिता में कुल तेरह टीम ने भाग लिया

	टीम का नाम	कैप्टन	प्रायोजक
1.	आर. के स्पोर्ट्स	धनराज स्वामी	ओमकारदास स्वामी
2.	पायल ब्रादर्स	उमेश स्वामी	सुनील पूनिया
3.	जय गोगा इलेवन	अर्जुन स्वामी	सोहन स्वामी
4.	धेतरवाल सुपर किंग्स	राधे स्वामी	पन्नालाल स्वामी
5.	बालाजी किंग्स इलेवन	केशव स्वामी	हरिराम स्वामी
6.	दादोजी क्लब	सीताराम स्वामी	सीताराम स्वामी
7.	मदन गोपाल इलेवन	जुगल स्वामी	नारायणदास स्वामी
8.	एस.जी. एक्सपोर्ट	संदीप	रवि पूनिया
9.	शिव गोरख इलेवन	मांगीलाल	जगदीश स्वामी
10.	भाई बंधु इलेवन	बाबूलाल स्वामी	दामोदरप्रसाद स्वामी
11.	श्री बालाजी इलेवन	मनोहर स्वामी	डूंगरदास
12.	युवा स्टार्स	ओमदास स्वामी	भीमदास स्वामी
13.	सूरत इलेवन	कैलाश स्वामी	केशरदास स्वामी

इस चार दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता का सूरत प्रवासी धनावंशी सभी बालक, युवा तथा प्रौढ़ों ने आनंद लिया। यहां धनावंशी स्वामियों में पारस्परिकता जगाने के लिए लगातार चार वर्षों से यह आयोजन किया जा रहा है।

सच्चे मित्र के सामने दुख आधा और हर्ष दुगुना प्रतीत होता है।

धनावंशी भक्ति के अंग

• चेतन स्वामी

धनाजी महाराज ने अवश्य विपुल परिमाण में साहित्य नहीं रचा, पर उनके जो उपलब्ध भक्ति पद तथा उनके जीवन चरित्र से जो बातें उभरकर सामने आती हैं, उन्हें हम अपनाकर अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं।

वैष्णव सम्प्रदायों में परिगणित धनावांश सम्प्रदाय के भी अपने भक्ति विधान हैं। उन्हें अपने आचरण में समाहित कर जीवन को धन्य बनाया जा सकता है। भक्ति भी आचरण बिना जीवन में पैठ नहीं सकती। भक्त शिरोमणी तुलसीदासजी नवधा भक्ति को प्रश्रय देते हैं। कुछ संतों ने दशधा भक्ति प्रकार भी बताए हैं, किंतु कुछ साम्प्रदायिकों ने भक्ति के इन नौ-दस प्रकारों को शामिल करते हुए विभिन्न पंथों की कतिपय आचरण संहिताएं तैयार की है। श्री रामानुज स्वामी ने अपने शिष्य वर्ग को बहोतर उपदेश (आचरण) समझाए। श्री रामानंदाचार्य ने यूं तो अपने शिष्य वर्ग के लिए पंच संस्कार आवश्यक बताए। उन्होंने कहा कि भगवद् भक्त वैष्णव उर्ध्वपुण्ड्र तिलक, मुद्रांकन, नामकरण, मंत्र ग्रहण तथा तुलसी कंठी से सम्पन्न होना चाहिए। उनके ग्रंथ वैष्णव मताब्ज भास्करादि से उनके भक्ति दर्शन का पता चलता है। उन्होंने वैष्णवों को अपनाने के लिए कोई संख्या में आचरणों की सूची तैयार नहीं की, किंतु गहन रामभक्ति के मार्ग को सुगम बनाने वाले सभी आचरणों को अपनाने हेतु उनका आग्रह अवश्य रहा है। उन्हीं के शिष्य धनाजी महाराज ने अवश्य विपुल परिमाण में साहित्य नहीं रचा, पर उनके जो उपलब्ध भक्ति पद तथा उनके जीवन चरित्र से जो बातें उभरकर सामने आती हैं, उन्हें हम अपनाकर अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। धनाजी ने जिस भक्ति का आलम्बन कर प्रभु से तादात्म्य स्थापित किया, वह आज भी सभी के लिए सुगम है।

भक्ति के 35 अंग

1. **भगवद् प्रीति :** अनन्य भाव से भगवान के प्रति प्रेम हो। जिस प्रकार मीरां बाई ने कहा मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई। ठीक वैसे भगवद् अनुराग को जगाएं।
2. **भगवद् कथा श्रवण–** भगवान की लीलाओं का पठन या श्रवण करने से मन आह्लादित होता है तथा विषयों से दूरी बढ़ती है। भगवान की सभी लीलाएं मनोहारी हैं।
3. **भगवद् यश में निमग्न–**भगवान षड ऐश्वर्ययुक्त हैं। उनका यश अखूट है तथा अपने भक्तों के प्रति उनका अनुग्रहपूर्ण भाव

प्यार कभी निष्फल नहीं होता, चरित्र कभी नहीं हारता,
धैर्य और दृढ़ता से ही सपने हमेशा सच हो जाते हैं।

होने से उनके प्रति अपनत्व भाव बढ़ता है।

4. **भगवद् साक्षात्कार अभिलाषा**–प्यारे दर्शन दीज्यो आय, सदैव मन में यह भावना बलवती रहे। हर समय भगवान के पावन दर्शन की अभिलाषा बनी रहे। मन में यह विश्वास भी रहे कि भगवान मुझे दर्शन अवश्य प्रदान करेंगे।

5. **भगवद् भरोसा**–राम (ठाकुरजी) ही तारक हैं। वे मुझे इस संसार समुद्र से संतरण कराएंगे। ठाकुरजी पर ही भरोसा बना रहा तो उसे वे कभी तोड़ेंगे नहीं, क्योंकि वे भक्त का भरोसा बनाए रखते हैं।

6. **भगवद् शरणागति**–शरणागति का तात्पर्य है, भगवान के चरणों का आश्रय प्राप्त कर लेना। भगवान को जो अपना मालिक मान लेता है, उसके समस्त योगक्षेम का दायित्व फिर भगवान का हो जाता है।

7. **सर्वत्र भगवद् दर्शन**–जो भगवतमय हो जाता है, उसके लिए सम्पूर्ण संसार की प्रत्येक वस्तु भी भगवत प्रतीति ही कराती है। उसे सबमें भगवान के ही दर्शन होते हैं। वस्तुत: भगवान से विलग कुछ भी नहीं है।

8. **भगवद् याचना**–सभी कर्मों से मुक्ति के लिए भगवद् याचना आवश्यक है। भगवद् याचना से प्रारब्धों की तीव्रता नहीं रहती तथा नए कर्म होने की सम्भावना क्षीण हो जाती है। निष्कामता के लिए भगवद् याचना करते रहें।

9. **भगवान को सबकुछ मानना**–भगवान को सदैव स्वामी, सखा, मात–पिता और गुरु मानते रहें। हमारे स्वामी केवल हमारे ठाकुरजी हैं। हम उनके दास हैं तथा सदैव उनकी सन्निधि में रहते हैं।

10. **गुरु प्रेम**–गुरु प्रेम एक वैष्णव होने के नाते हमारा एक बड़ा ध्येय है, जिसे अपने गुरु की पहचान नहीं होती, वह सदैव अज्ञान रूपी अंधकार ढोने को विवश रहता है। धनावंश के गुरु एकमात्र धनाजी महाराज हैं। गुरु प्रेम भगवान से भी अधिक हो।

11. **नैमितिक स्वाध्याय**–वैष्णव पंथ से सम्बन्धित ग्रंथों का रोजाना पठन–पाठन करना चाहिए। विष्णु पुराण, पद्म पुराण, स्कंद पुराण, रामचरित मानस, श्रीमद् भगवद् गीता जैसे सभी ग्रंथों का नैमितिक अध्ययन करें।

12. **चिह्न धारण**–रोजाना शुद्ध भाव से सम्प्रदाय विषयक वैष्णवी चिह्न को धारण करें। मस्तक सहित शरीर के कंठ, बाहू, गले, पेट, पर गोपीचंदन का तिलक करें। गले में तुलसी माला व सिर पर चोटी धारण करें।

13. **प्रतिमा एवं शालिग्राम पूजन**–प्रत्येक वैष्णव को ठाकुरजी की प्रतिमा तथा शालिग्राम का पूजन करना चाहिए। यह पूजन धनावंशी को प्रतिदिन प्रात: एवं सायंकाल को करना होता है।

14. **प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण**–प्रार्थना के सभी मंत्रों का ठाकुरजी के समीप बैठकर उच्चारण करना चाहिए। मंत्रों से बाहर–भीतर की शुद्धि होती है। प्रतिदिन ठाकुरजी की आरती एवं अन्यान्य स्तुतियां भी करनी चाहिए।

15. **ठाकुर शृंगार**–प्रतिदिन ठाकुरजी का शृंगार करते समय ठाकुरजी के विग्रह को जीवंत भाव से देखना तथा गद्गद् होना चाहिए तथा यह सोचना चाहिए कि भगवान मुझे यह अनुपम अवसर प्रदान कर रहे हैं।

16. **नैवेद्य समर्पण**–बाल भोग के रूप में प्रतिदिन भगवान को तुलसी सहित नैवेद्य का भोग लगाएं। स्वयं प्रसाद ग्रहण करें। दूसरे श्रद्धालुओं को भी बड़े भाव से प्रसाद एवं चरणामृत भेंट करें।

17. **साष्टांग प्रणाम**–भगवद् विग्रह के समक्ष पहुंचते ही लम्बे पसरकर उन्हें साष्टांग प्रणाम करें। एक वैष्णव द्वारा भगवान को प्रणाम करने की यही विधि है।

18. **जप करना**–ठाकुरजी की प्रतिमा के समक्ष उपांशु जप करना बड़ा मूल्यवान है। जप की कोई अवधि नहीं होती। मंदिर में बैठकर जप करने का महत्त्व अधिक होता है।

19. **संयम व्रत**–चाहे आप गृहस्थी हैं अथवा विरक्त संयम का आचरण अपनाकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं। संयम वैचारिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार का करें।

20. **तीर्थाटन**–एक धनावंशी स्वामी को विभिन्न वैष्णवी स्थलों (तीर्थों) में अवश्य जाना चाहिए तथा उन स्थलों पर बैठकर नाम स्मरण और जप भी करना समीचीन होगा।

क्या खूब कहा है किसी ने सांस के साथ अकेला चल रहा था,
और सांस गई तो सब साथ चलने लगे।

आलेख

धनावंशियों के लिए विष्णु सहस्रनाम का महत्त्व

एक समय मैं ब्रह्माजी के पास गया था। वहाँ उनके मुख से मैंने भगवान् विष्णु के पापनाशक माहात्म्य का श्रवण किया। सुरश्रेष्ठ! ब्रह्माजी ने मेरे सामने भगवान् विष्णु की महिमा का भलीभाँति वर्णन किया। भगवान् के नाम की जितनी शक्ति है, वह भी मैंने उनके मुख से सुनी है। तत्पश्चात् पहले विष्णु के नामों के विषय में प्रश्न किया। तब उन्होंने कहा–नारद! मैं इस बात को नहीं जानता, इसका ज्ञान महारुद्र को है।

ऋषियों ने कहा–सूतजी! आपका हृदय अत्यंत करुणा युक्त है; अतएव श्रीमहादेवजी और देवर्षि नारद का जो अद्भुत संवाद हुआ था, उसे आपने हम लोगों से कहा है। हम लोग श्रद्धापूर्वक सुन रहे हैं। अब आप कृपापूर्वक यह बताइए कि महात्मा नारद ने ब्रह्माजी से भगवन्नामों की महिमा का किस प्रकार श्रवण किया था।

सूतजी बोले–द्विजश्रेष्ठ मुनियो! इस विषय में मैं पुराना इतिहास सुनाता हूँ। आप सब लोग ध्यान देकर सुनें। इसके श्रवण से भगवान श्रीकृष्ण में भक्ति बढ़ती है। एक समय की बात है, चित्त को पूर्ण एकाग्र रखने वाले नारदजी अपने पिता ब्रह्माजी का दर्शन करने के लिए मेरु पर्वत के शिखर पर गए। वहाँ आसन पर बैठे हुए जगत्पति ब्रह्माजी को प्रणाम करके मुनिश्रेष्ठ नारदजी ने इस प्रकार कहा–विश्वेश्वर! भगवान् के नाम की जितनी शक्ति है, उसे बताइए। प्रभो! ये जो सम्पूर्ण विश्व के स्वामी साक्षात् श्रीनारायण हरि हैं, इन अविनाशी परमात्मा के नाम की कैसी महिमा है?

ब्रह्माजी बोले–बेटा! इस कलियुग में विशेषत: नाम–कीर्तनपूर्वक भगवान् की भक्ति जिस प्रकार करनी चाहिए, वह सुनो। जिनके लिए शास्त्रों में कोई प्रायश्चित्त नहीं बताया गया है, उन सभी पापों की शुद्धि के लिए एकमात्र विजयशील भगवान् श्रीविष्णु का प्रयत्नपूर्वक स्मरण ही सर्वोत्तम साधन देखा गया है, वह समस्त पापों का नाश करने वाले है। अत: श्रीहरि के नाम का कीर्तन और जप करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह सब पापों से मुक्त हो, श्रीविष्णु के परमपद को प्राप्त होता है। जो मनुष्य हरि इस दो अक्षरों वाले नाम का सदा उच्चारण करते हैं, वे उसके उच्चारण मात्र से मुक्त हो जाते हैं–इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। तपस्या के रूप में किए जाने वाले जो संपूर्ण प्रायश्चित हैं, उन सबकी अपेक्षा श्रीकृष्ण का निरंतर स्मरण श्रेष्ठ है। जो मनुष्य प्रात:, सायं तथा मध्याह्न आदि के समय नारायण नाम का स्मरण करता है, उसके समस्त पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं।

उत्तम व्रत का पालन करने वाले नारद! मेरा कथन सत्य है, सत्य है, सत्य है। भगवान् के नामों का उच्चारण करने मात्र से मनुष्य बड़े–बड़े पापों से मुक्त हो जाता है। राम–राम–राम–राम इस प्रकार बारम्बार जाप करने वाला मनुष्य यदि चांडाल हो तो भी वह पवित्रात्मा हो जाता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। उसने नाम कीर्तन मात्र से कुरुक्षेत्र, काशी, गया और द्वारका आदि सम्पूर्ण तीर्थों का सेवन कर लिया। जो कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! इस प्रकार जप और कीर्तन करता है, वह इस संसार का परित्याग करने पर भगवान् विष्णु के समीप आनंद भोगता है। ब्रह्मन! जो कलियुग में प्रसन्नतापूर्वक नृसिंह नाम का जप और कीर्तन करता है, वह भगवद्भक्त मनुष्य महान पाप से छुटकारा पा जाता है। सत्ययुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ तथा द्वापर में पूजन करके मनुष्य जो कुछ पाता है, वही कलियुग में केवल भगवान् केशव का कीर्तन करने से पा लेता है। जो लोग इस बात को जानकर जगदात्मा केशव के भजन में लीन होते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो, श्रीविष्णु के परमपद को प्राप्त कर लेते हैं। मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि–ये दस अवतार इस पृथ्वी पर बताए गए हैं।

अपने पास बुद्धि और दूसरों के पास धन सबको अधिक लगता है।

21. **भगवान प्राण प्रिय**–ठाकुरजी को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय समझना चाहिए। किसी भी स्थिति में भगवान को भूलें नहीं। तभी अहर्निश भगवत स्मरण बना रहेगा।

22. **अवगुण परित्याग**–अपने अवगुणों का अवलोकन कर उनके परित्याग के लिए सतत् चेष्टारत हो जाएं। अवगुण परित्याग के लिए आप परमात्मा से बल की प्रार्थना करें।

23. **प्रभु भक्ति से प्रीति**–यों तो सभी से प्रेम रखना चाहिए, पर प्रभु भक्तों के प्रति आपके मन में अतिशय प्रेम हों। उनके प्रति आप सदैव विनम्र एवं सेवाभावी बने रहें।

24. **सेवा का भाव**–निष्काम सेवा से भगवान की प्राप्ति होती है। हर सेवाकार्य के लिए तत्पर रहें। सेवा केवल धन से ही नहीं होती है। वह तन और मन से भी सम्भव है।

25. **धन के याचक न बनें**–सांसारिक योग वस्तुओं की वासना कम करते करते मिटाने की होती है। धन की सम्प्राप्ति से भोगेच्छा और प्रवृत्तियों में वृद्धि होगी। जो तुम्हारे लिए घातक है।

26. **जीवन में नैतिकता**–जीवन में जरा सी शिथिलता और अनैतिकता आपके पतन का बड़ा कारण बन सकती है। नैतिकता के वरण से जीवन में निर्भीकता और पवित्रता आती है।

27. **व्रतों का पालन**–जीवन में कतिपय धार्मिक उद्देश्य होने चाहिए। दृढ़तापूर्वक उन उद्देश्यों की सम्पूर्ति में लगें। अपने निर्धारित व्रतों के पालन में शिथिलता न आने दें।

28. **सबके प्रिय और हितकारी बनें**–आपका व्यवहार मृदु और प्रिय हो तथा आप सबके हित का चिंतन करें–दूसरों के हित को सदैव प्राथमिकता देवें।

29. **द्वेष और निंदा परित्याग**–मेरे सब प्रिय हैं, मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। किंचित भी किसी से न द्वेष करें और न ही निंदा और चुगली। निंदा करने से दूसरों के दोष आप में निवास करने लगेंगे।

30. **सत्यानुगामी बनें**–भगवान सत् चित्त आनन्द स्वरूप हैं। सदैव सत्य का अनुसरण करें। सत्य का व्यवहार कल्याणकारी है, वहीं असत्य में पड़ने से नरक को ठौड़ बनती है।

31. **उदारता, सरलता और मैत्री भाव**–सभी को अपना मित्र समझकर सदैव उदार भाव रखें। जीवन जितना सरल होगा, उतनी ही अधिक आध्यात्मिक उन्नति होगी।

32. **निर्भय बनें**–जिसे भगवान के अलावा कुछ भी प्राप्त करने की कामना नहीं रह जाती, उसे किसी का भय नहीं रहता। भगवान के बनकर निर्भय हो जाओ।

33. **शीलवान और संतोषी रहें**–शील को अपनाए बिना पवित्रता पास भी नहीं फटकती और जो मिल जाए, उसी में संतोष न बरतने से साधुता नहीं आएगी।

34. **सर्वथा व्यसन मुक्ति**–सदैव अपने भीतर इस विश्वास को दृढ़ करते रहें कि मैं एक उच्च कोटि का वैष्णव हूं, जिसका किसी भी प्रकार के व्यसन से कोई नाता नहीं है। मैं सदैव हर व्यसन से दूर रहूंगा। व्यसन के दुर्गुण दूसरों को भी समझाऊंगा।

35. **मैं एक शिष्ट धनावंशी हूं**–सदैव इसे याद रखें कि मैं प्रभु पंथ पर चलने वाला एक शिष्ट धनावंशी हूँ। मेरा पंथ सम्प्रदाय धार्मिकता से ओतप्रोत है, इसलिए मेरी धार्मिकता को मैं कभी भी खण्डित नहीं होने दूंगा।

कच्चे कान, शक्की नजर और कमजोर मन
इंसान को अच्छी समृद्धि के बीच भी
नरक के जैसा अनुभव कराते है।

ईश्वर जिम्मेदारी उसी को देता है, जो निभाने के काबिल होता है।

इनके नामोच्चारण मात्र से सदा ब्रह्महत्यारा भी शुद्ध होता है। जो मनुष्य प्रातःकाल जिस किसी तरह भी श्रीविष्णु नाम का कीर्तन, जप तथा ध्यान करता है, वह निस्संदेह मुक्त होता है, निश्चय ही नर से नारायण बन जाता है।

सूतजी कहते हैं–यह सुनकर नारदजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे अपने पिता ब्रह्माजी से बोले–तात! तीर्थसेवन के लिए पृथ्वी पर भ्रमण करने की क्या आवश्यकता है; जिनके नाम का ऐसा महात्म्य है कि उसे सुनने मात्र से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है, उन भगवान् का ही स्मरण करना चाहिए। जिस मुख में राम–राम का जप होता रहता है, वही महान तीर्थ है, वही प्रधान क्षेत्र है तथा वही समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। सुव्रत! भगवान् के कीर्तन करने योग्य कौन–कौनसे नाम हैं? उन सबको विशेष रूप से बताइए।

ब्रह्माजी ने कहा– बेटा! ये भगवान् विष्णु सर्वत्रव्यापक सनातन परमात्मा है। इनका न आदि है न अन्त। ये लक्ष्मी से युक्त, सम्पूर्ण भूतों के आत्मा तथा समस्त प्राणियों को उत्पन्न करने वाले हैं। जिनसे मेरा प्रादुर्भाव हुआ है, वे भगवान् विष्णु सदा मेरी रक्षा करें। वही काल के भी काल और वही मेरे पूर्वक हैं। उनका कभी विनाश नहीं होता। उनके नेत्र कमल के समान शोभा पाते हैं। वे परम बुद्धिमान, अविकारी एवं पुरुष (अंतर्यामी) हैं। सदा शेषनाग की शय्या पर शयन करने वाले भगवान् विष्णु सहस्रो मस्तक वाले हैं। वे महाप्रभु हैं। सम्पूर्ण भूत उन्हीं के स्वरूप हैं। भगवान जनार्दन साक्षात् विश्वरूप हैं। कैटक नामक असुर का वध करने के कारण वे कैटभारि कहलाते है। वे ही व्यापक होने के कारण विष्णु, धारण–पोषण करे के कारण धाता और जगदीश्वर हैं। नारद! मैं उनका नाम और गोत्र नहीं जानता। तात! मैं केवल वेदों का वक्ता हूँ, वेदातीत परमात्मा का ज्ञाता नहीं, अतः देवर्षे! तुम वहाँ जाओ, जहाँ भगवान विश्वनाथ रहते हैं। मुनिश्रेष्ठ! वे तुमसे सम्पूर्ण वे तुमसे सम्पूर्ण तत्त्व का वर्णन करेंगे। कैलास के स्वामी श्रीमहादेवजी ही अंतर्यामी पुरुष हैं। वे देवताओं के स्वामी और सम्पूर्ण भक्तों के आराध्यदेव हैं। पाँच मुखों से सुशोभित भगवान् उमानाथ सब दुःखों का विनाश करने वाले हैं। सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर श्रीविश्वनाथजी सदा भक्तों पर दया करने वाले हैं। नारद! वहीं जाओ, वे तुम्हें सब कुछ बता देंगे।

सूतजी कहते हैं–पिता की बात सुनकर देवर्षि नारद कैलास पर्वत पर, जहाँ कल्याणप्रद भगवान् विश्वेश्वर नित्य निवास करते हैं, गये। देवताओं द्वारा पूजित देवाधिदेव जगद्गुरु भगवान् शंकर कैलास के शिखर पर विराजमान थे। उनके पाँच मुख, दस भुजाएँ, प्रत्येक मुख में तीन नेत्र तथा हाथों में त्रिशूल, कपाल, खट्वांग, तीक्ष्ण शूल, खड्ग और पिनाक नाम का धनुष शोभा पा रहे थे। बैल पर सवारी करने वाले वरदाता भगवान् भीम अपने अंगों में भस्म रमाये सर्पो की शोभा से युक्त चंद्रमा का मुकुट पहने करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान हो रहे थे। नारदजी ने देवेश्वर शिव को साष्टांग दंडवत किया। उन्हें देखकर महादेवजी के नेत्रकमल खिल उठे। उस समय वैष्णवों में सर्वश्रेष्ठ शिव ने ब्रह्मचारियों में श्रेष्ठ नारदजी से पूछा–देवर्षिप्रवर! बताओ कहाँ से आ रहे हो?

नारदजी ने कहा–भगवन्! एक समय मैं ब्रह्माजी के पास गया था। वहाँ उनके मुख मैंने भगवान् विष्णु के पापनाशक महात्म्य का श्रवण किया। सुरश्रेष्ठ! ब्रह्माजी ने मेरे सामने भगवान् विष्णु की महिमा का भलीभाँति वर्णन किया। भगवान् के नाम की जितनी शक्ति है, वह भी मैंने उनके मुख से सुनी है। तत्पश्चात् पहले विष्णु के नामों के विषय में प्रश्न किया। तब उन्होंने कहा–नारद! मैं इस बात को नहीं जानता, इसका ज्ञान महारुद्र को है। वे ही सब कुछ बताएँगे। यह सुनकर मैं आपके पास आया हूँ। इस घोर कलियुग में मनुष्यों की आयु थोड़ी होगी। वे सदा अधर्म के लिए तत्पर रहेंगे। भगवान् के नामों में उनकी निष्ठा नहीं होगी। कलियुग के ब्राह्मण पाखंडी, धर्म से विरक्त, संध्या न करने वाले, व्रतहीन, दुष्ट और मलीन होंगे; जैसे ब्राह्मण होंगे, वैसे ही क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा अन्य जाति के लोग भी होंगे। प्रायः मनुष्य भगवान् के भक्त नहीं होंगे। द्विजों से बाहर गिने जाने वाले शूद्र कलियुग में धर्म–अधर्म तथा हिताहित का ज्ञान भी नहीं रखते; ऐसा जानकर मैं आपके निकट आया हूँ। आप कृपा करके विष्णु के सहस्र नामों का वर्णन कीजिए, जो पुरुषों के लिए सौभाग्यजनक, परम उत्तम तथा सर्वदा भक्तिभाव को बढ़ाने वाले है; इसी प्रकार जो ब्राह्मणों को ब्रह्मज्ञान, क्षत्रियों को विजय, वैश्यों को धन तथा शूद्रों को सदा सुख देने वाले हैं। सुव्रत! जो सहस्रनाम परम गोपनीय है, उसका वर्णन कीजिए। वह परम पवित्र एवं सदा सर्वतीर्थमय है; अतः मैं उसका श्रवण करना चाहता हूँ। प्रभो! विश्वेश्वर! कृपया उस सहस्रनाम का उपदेश कीजिए।

नारदजी के वचन सुनकर भगवान् शंकर के नेत्र आश्चर्य से चकित हो उठे। भगवान् विष्णु के नाम का बारम्बार स्मरण करके उनके शरीर में रोमांच हो आया। वे बोले ब्रह्मन! भगवान् विष्णु के सहस्रनाम परम गोपनीय हैं। इन्हें सुनकर मनुष्य दुर्गति में नहीं पड़ता। यो कहकर भगवान् शंकर ने नारदजी को विष्णुसहस्रनाम का उपदेश दिया, जिसे पूर्वकाल में वे भगवती पार्वती जी को सुना चुके थे। इस प्रकार नारदजी ने कैलास पर्वत

पर भगवान् महेश्वर से श्रीविष्णुसहस्रनाम का ज्ञान प्राप्त किया। फिर दैवयोग से एक बार वे कैलास से उतर कर नेमिषारण्य नामक तीर्थ में आए। वहाँ के ऋषियों ने ऋषिश्रेष्ठ महात्मा नारद को आया देख विशेष रूप से उनका स्वागत-सत्कार किया। उन्होंने विष्णुभक्त विप्रवर नारदजी के ऊपर फूल बरसाये, पाद्य और अर्घ्य निवेदन किया, उनकी आरती उतारी और फल-मूल निवेदन करके पृथ्वी पर साष्टांग प्रणाम किया। तत्पश्चात् वे बोले-महामुनि! हम लोग इस वंश में जन्म लेकर आज कृतार्थ हो गए; क्यों आज हमें परम पवित्र और पापों का नाश करने वाला आपका दर्शन प्राप्त हुआ। देवेर्ष! आपके प्रसाद से हमने पुराणों का श्रवण किया है। ब्रह्मन! अब आप यह बताइए कि किस प्रकार से समस्त पापों का क्षय हो सकता है। दान, तपस्या, तीर्थ, यज्ञ, ध्यान, इंद्रिय-निग्रह और शास्त्र समुदाय के बिना ही कैसे मुक्ति प्राप्त हो सकती है?

नारदजी बोले-मुनिवरो! एक समय भगवती पार्वती ने कैलास शिखर पर बैठे हुए अपने प्रियतम देवाधिदेव जगद्गुरु महादेवजी से इस प्रकार प्रश्न किया।

पार्वती बोलीं-भगवन्! आप सर्वज्ञ और सर्वपूजित श्रेष्ठ देवता हैं। जन्म और मृत्यु से रहित स्वयंभू एवं सर्वशक्तिमान हैं। स्वामिन! आप सदा किसका ध्यान करते हैं? किस मंत्र का जप करते हैं? देवेश्वर इसे जानने की मेरे मन में बड़ी उत्कंठा है। सुव्रत! यदि मैं आपकी प्रियतमा और कृपापात्र हूँ तो मुझसे यथार्थ बात कहिए।

महादेवजी बोले-देवि! पहले सत्ययुग में विशुद्ध चित्त वाले सब पुरुष सम्पूर्ण ईश्वरों के भी ईश्वर एकमात्र भगवान् विष्णु का तत्त्व जानकर उन्हीं के नामों का जप किया करते थे और उसी के प्रभाव से इस लोक तथा परलोक में भी परम ऐश्वर्य को प्राप्त करते थे। प्रिये! तुलादान, अश्वमेध आदि यज्ञ, काशी, प्रयाग आदि तीर्थों में किए स्नान आदि शुभकर्म, गया में किए हुए पितरों के श्राद्ध-तर्पण आदि, वेदों के स्वाध्याय आदि, जप, तप, नियम, जीवों पर दया, गुरुशुश्रूषा, सत्यभाषण, वर्ण और आश्रम के धर्मों का पालन, ज्ञान तथा ध्यान आदि साधनों का कोटि जन्मों तक भलीभाँति अनुष्ठान करने पर भी मनुष्य परम कल्याणमय सर्वेश्वरेश्वर भगवान् विष्णु को नहीं पाते। परन्तु जो दूसरे का भरोसा न करके सर्वभाव से पुराण पुरुषोत्तम श्रीनारायणजी की शरण ग्रहण करते हैं, वे उन्हें प्राप्त कर लेते हैं। जो लोग एकमात्र श्रीभगवान् विष्णु के नामों का कीर्तन करते हैं, वे सुख और आनन्द को प्राप्त करते हैं। अत: सदैव भगवान् विष्णु का स्मरण करना चाहिए।

परम परमेश्वर भगवान आशुतोष शिवजी ने श्रीविष्णु सहस्रनाम के पाठ की जो महिमा गाई है, वह क्या व्यर्थ है? किसी भी धनावंशी को इहलौकिक और पारलौकिक समृद्धि प्राप्त करनी है तो वह प्रतिदिन स्नान आदि नित्यकर्म कर पवित्र भाव से अपने घर में स्थित भगवान ने श्रीविग्रह के समक्ष बैठकर श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ करे और शीघ्र ही उसका चामत्कारिक लाभ प्राप्त करे।

कविता — अभी बाकी है

संजय कुमार स्वामी (बेनीवाल), पांडूसर

शुरुआत को मत समझो कामयाबी
सफलता का सैलाब अभी बाकी है।

अभी उठाई है लक्ष्य की ओर नजरें
स्वाद मेहनत का आना अभी बाकी है।

लोगों ने उठाए हैं धनावंश पर सवाल
सवालों के जवाब आने अभी बाकी है।

रखा है मंजिल के प्रायदान पर पांव
लाजवाब शिखर को छूना अभी बाकी है।

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की थे वे त्रिवेणी
भक्त धनाजी के विचारों का प्रवाह अभी बाकी है।

धनाजी का मान बढ़े

ढीनढ़याल वैष्णव (जाखड़) जोधपुर

मनु-शतरुपा थे किस जाति के
इस पर भी क्यां संशय होगा?

भक्तों के सिरमौर धनाजी
बिना बात क्या द्वंद्व होगा?

वे थे भक्त बड़े आलौकिक
भक्ति का रसपान कराया।

ठाकुरजी को निज वश में किया
भगवान ने भक्त का ढोर चराया।

जब भक्त का मान बढ़ेगा
धनावंश का उत्थान बढ़ेगा।

रिश्ता चाहे कोई भी हो, हीरे की तरह होना चाहिए, दिखने में छोटा किंतु कीमती और अनमोल।

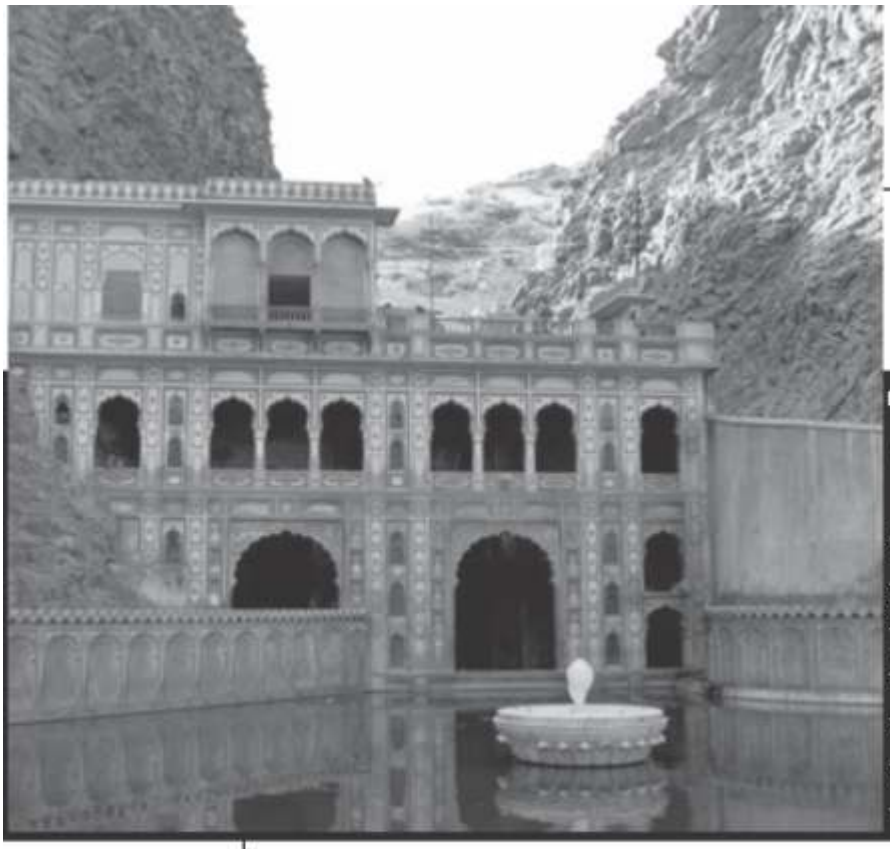

प्रकृति के सौन्दर्य में समाया गलता तीर्थ

गलता एक तीर्थ ही नहीं है वरन् प्रकृति सौन्दर्य का घर है। यहां गालव तीर्थ के ही दर्शन केवल न मिलते है वरन् बालाजी से भी साक्षात्कार होता है। कहते हैं कि महाराज जयसिंह द्वितीय के समय में राव कृपाराम द्वारा वर्तमान स्वरूप को प्राप्त गलता जयपुर से दो मील की दूरी पर पूर्व दिशा में कोई 350 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। किसी समय यहां पर ही गालव ऋषि निवास करते थे।

यह स्थान जयपुर के सूर्य पोल बाहर पूर्व की पहाड़ी में है। वहां पयहारीजी का आश्रम और धूनी है। नीचे कुण्ड में हलके गर्म जल का नाला डाँकता है। वहां वाले उसको तीर्थ मानकर पर्वादि के अवसर पर मेला लगाते हैं और नर-नारी सहस्रों की संख्या में वहां स्नान करने जाते हैं। एकान्त स्थान होने कारण एवं प्रकृति की गोद स्थित होने के कारण यह स्थान एकान्तवास का एक उत्तम स्थान है। इस स्थान तक पहुंचने के दो मार्ग हैं। एक तो पैदल सूरजपोल से होकर ऊपर चढ़कर जाने तथा दूसरा सवारी द्वारा पीछे से घाट होकर जाने का। इस स्थान पर कई देवमन्दिर एवं निवास स्थान हैं। वहां के आचार्यों में कई विद्वान एवं बलवान हुए हैं। जनश्रुति में इसे गालवाश्रम कहा गया है और गलता को गालव तीर्थ का छोटा रूप माना गया है। कुछ का विचार है कि गलता गलिता शब्द का विकृत रूप है और इसका अर्थ है दबाव के साथ पानी का धीरे-धीरे बाहर निकलना। गणेश्वर महात्म्य में भी इस स्थान का वर्णन है।

नाभादासजी के भक्तमाल नामक ग्रंथ में भी पयहारी और पृथ्वीराज का वर्णन है। कहते हैं कि रामनन्दजी के शिष्य अनन्तानन्दजी और अनन्तानन्दजी के शिष्य कृष्णादासजी पयहारी हुए। दूध ही का आहार करने के कारण पयहारी कहलाये। बीकानेर के महाराजा लूणकरजी की पुत्री जिनका विवाह सं. 1564 में हुआ था, उनके यह गुरु थे। इनकी गुफा यहाँ कुण्ड के बाहर है। थोड़ी दूर पर दो बड़े वैष्णव मन्दिर हैं। इनमें से पुरोहितजी के मन्दिर में दक्षिण की ओर ऊपर के खण्ड में बड़े सुन्दर 18वीं शताब्दी के निर्मित्त चित्र हैं। उनमें जयपुर शैली में राग रागिनियों का चित्रांकन है।

कलाप्रेमियों की कला सम्बन्धी पिपासा यहां जब शान्त हो जाती है और वे जब यहां से लौटते हैं तो उन्हें दो पहाड़ियों के बीच के मार्ग से होकर ऊपर जाना होता है। गऊ धार कुण्ड के स्त्री एवं पुरुषों के धारों के पास से होकर ऊपर जाने पर चढ़ाई का आश्रय लेना पड़ता है और पथरीले टेढ़े मेढ़े मार्ग से जाते हुए यात्री ऊपर जब पहुंचता है तो वह फिर खुले स्थान पर पहुंचकर सामने पश्चिम की ओर सीधी सड़क को देखता है जो कि ठीक सीधे चांदपोल दरवाजे तक जाती हुई दिख पड़ती है और वहाँ से सड़क पर चलने वाले नर-नारी छोटे कद के ज्ञात होते हैं। इस स्थान से दो मार्ग मुड़ते हैं। एक तो ढालू होकर नीचे की ओर जाता है और दूसरा चढ़ाई का मन्दिर की ओर जाता है। नगर के पूर्व में 1 मील दूर पर्वत शिखर पर स्थित सूर्य का यह मन्दिर जयपुर के नरेशों के सूर्यवंशी होने का संकेत है। भानु सप्तमों के और

शेष पृष्ठ 22 पर

किसी पर कीचड़ मत उछालिये, उस पर लगेगा या नहीं ये पता नहीं किंतु अपने हाथ गंदे होंगे, यह पक्की बात है।

सादर आमंत्रण

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

स्व. कानदासजी, प्रभुदयालजी,
ओमदासजी मूण्ड (स्वामी) की स्मृति में

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ महोत्सव

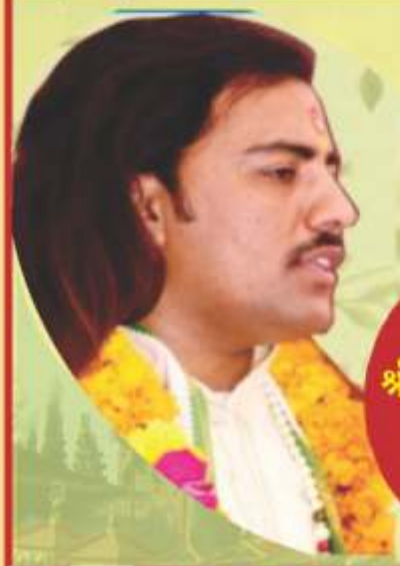

02 से 08 फरवरी 2020
प्रात: 11 बजे से सायं 4 बजे तक

कथावाचक
महंत
श्री गौतमदासजी
शास्त्री
श्रीधाम
लाडनूं

कलश यात्रा
प्रात: 9.30 बजे से
श्री ठाकुरजी के मंदिर से
कथास्थल देवांशी निवास तक

08 फरवरी 2020
भजन संध्या
रात्रि में

09 फरवरी 2020
हवन व प्रसादी
प्रात:

विशेष आग्रह
प.पू. साध्वी डॉ. विश्वेश्वरी देवीजी
अध्यक्ष : श्री गौधाम गौशाला चैरिटेबल ट्रस्ट
बिरड़ो की ढाणी (राजापा), चरला

* स्वागतोत्सुक *

रामदास, मोहनदास, भीखदास, धन्नदास, सीतादास, भागीरथदास,
रामनिवास एवं समस्त स्वामी (मूण्ड) परिवार, बाड़ा

* आयोजक *

सुरेशदास, नवरत्नदास, हरिदास स्वामी (मूण्ड), ग्रा.पो. बाड़ा

CONTACT : 9673950100, 9024312434

श्री धनावंशी स्वामी समाज के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम पंचायत : पांडुसर

पंचायत समिति : नोहर

लाजवंती स्वामी

धर्मपत्नी : सुरेश स्वामी

सरपंच पद पर भारी मतों से विजयी होने पर हार्दिक शुभकामनाएं

* तीन प्राथमिकताए *

- शुद्ध पेयजल की आपूर्ति
- सड़क व नाली निर्माण
- शिक्षा की बेहतर व्यवस्था

शुभेच्छु : समस्त ग्रामवासी, पाण्डुसर (नोहर)

धनावंशी स्वामी समाज, सूरत

द्वारा आयोजित

चतुर्थ क्रिकेट प्रतियोगिता DPL-4

में विजेता टीम पायल ब्रदर्स, सूरत

टीम स्पोंसर
श्री अरविन्द पूनियां
सुपुत्र : बीरबलदासजी पूनियां
पूनियां परिवार, भगवानसर (नोहर)

कैप्टन रमेश स्वामी, थिराना

DPL-4

KOMAL CUP विजेता

Sponsor Firm
TRISHNA CREATION
M.: 7096616966
202, Talangpur road, Sachin, Surat

श्री धनावंशी स्वामी समाज के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम पंचायत : श्री बालाजी, नागौर

गायत्री स्वामी

धर्मपत्नी
सुखदेव स्वामी

को सरपंच चुने जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

ग्रामवासियों का आभार

बजरंगदास स्वामी
M.: 9414416907

सुखदेव स्वामी
M.: 9784778444

शुभेच्छु : समस्त ग्रामवासी, श्रीबालाजी, नागौर

मृत्यु बैठक पर भारी उपस्थिति कितनी जायज?

विशद परिचर्चा

इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा में ध्रुव स्वामी हरियासर, सुबेदार मेजर जगदीशदास स्वामी हरियासर, राजकुमार स्वामी निम्बी जोधा, दिनेश स्वामी कड़वा बीदासर, दिनेशप्रसाद स्वामी खानपुर, अर्जुनदास स्वामी हरियासर, संत श्री सीतारामदास स्वामी परिव्राजक, घनश्यामदास स्वामी श्रीडूंगरगढ़ ने भाग लिया तथा परिचर्चा का संचालन चेतन स्वामी ने किया।

चेतन स्वामी के विचार

इस बार की परिचर्चा का विषय है कि मृत्यु बैठक पर भारी उपस्थिति कितनी जायज है? यह प्रश्न हर किसी को चौंका सकता है। भला यह भी कोई बात हुई? किसी की मृत्यु पर शोक सम्वेदना प्रकट करने के लिए लोग तो आएंगे ही। जितनी अधिक संख्या में लोग उपस्थित होते हैं, उससे मृतक के परिवार की लोक ख्याति का पता चलता है। आओ कुछ बातों पर विचार करें–

1. मृत्यु बैठक का समय धनावंशियों में सतरही तक यानि सतरह दिनों तक होता है।
इन सतरह दिनों तक लोग शोक सम्वेदना प्रकट करने आते है, इन आगन्तुकों में दो तरह के लोग होते हैं। एक तो मृतक के दोस्त, परिचित एवं गांव –शहर के लोग और दूसरे रिश्तेदार। गांव–शहर के मित्र–परिचित लोग अलग–अलग वारों में आकर, थोड़ी देर बैठकर चले जाते हैं। पर रिश्तेदारों के लिए आजकल एक दिन नियत कर उसी दिन बुलवाया जाता है। अधिकांश रिश्तेदार उसी दिन पहुंचने का प्रयास करते हैं। ये आनेवाले रिश्तेदार अब एक परिवार से एक ही व्यक्ति पहुंचने की बजाय बड़ी तादाद में उपस्थित होने लगे हैं, कई लोग तो पूरी बड़ी बस (जिसमें पचास–साठ लोग आ सकते हैं) लेकर आने लगे हैं। इसमें आनेवाला अपनी नामवरी तो, मेजबान अपनी नामवरी समझता है। और इस प्रकार नियत दिन में पांच–छह सौ लोग आसानी से पहुंच जाते है। मेजबान मृतक के परिवारवाले अपने सामर्थ्य के अनुसार इन उपस्थित जनों के लिए बेहतरीन मिठाइयों के साथ एक बड़ा भोज करता है। इसे आसानी से औसर पूर्व का अघोषित औसर कह सकते है। यह प्रथा इन दिनों में विकसित हुई है।
2. यह बैठक भोज बेहद खर्चीला तो है ही, पर हम धनावंशी कर्मकाण्ड के हिसाब से भी जब तक सूतक नहीं निकलता है, उससे पहले ही मृतक के घर का यह भोज गटक लेते है? क्या यह अधार्मिकता की कोटि में नहीं आता?
3. क्या हम समाज में प्रदर्शन के नए–नए रास्ते तलाश रहे हैं। अन्य बहुत से समाजों ने औसर बंद कर दिए हैं, वहां हमने क्या दो–दो औसर नहीं शुरु कर दिए हैं?
4. एक रिश्तेदार की मृत्यु पर तीन बार उपस्थित होने का चलन हो गया है। मृतक के दाग पर, बैठक पर

साफ दिल और साफ बातें, हर किसी को रास नहीं आती।

और औसर के दिवस। जबकि संवेदना एक ही दिन में प्रकट की जा सकती है।

5. मृत्यु बैठकों में बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, पान-पराग और न जाने क्या-क्या चीजों की मनुहार करते हैं। यह भी अति की श्रेणी को पार कर रहा है।

इन उपरोक्त मुद्दों पर समाज को चिंतन करना चाहिए। हम धीरे-धीरे धनावंशी अचारण भूलकर दिखावे में जीने लगे हैं।

ध्रुव स्वामी, हरियासर के विचार

आज से पच्चीस-तीस वर्ष पूर्व मृत्यु-बैठक का स्वरुप वह नहीं था, जो हम आज देख रहे हैं, क्योंकि उस समय संशाधनों का अभाव था। आज तो यह स्थिति है कि तीन बार तो जाना अनिवार्य है ही, यह अनुचित भी है और दोनों ओर परेशानी देनेवाला भी। वास्तव में अपने किसी प्रेमी या स्वजन के प्रति सम्वेदना प्रकट करनी है तो वह एक बार जाकर ही प्रकट की जा सकती है। बार बार जाने से सहानुभूति ज्यादा नहीं होती। मैं समझता हूँ परिवार को तीन बार या दो बार मृतक रिश्तेदार के घर जाना आजकल फैशन बन गया है। पुराने जमाने में रिश्तेदार एक बार इकट्ठे होते थे, क्या इससे दिलों में प्रेम कम हो जाता था?

आज कोई व्यक्ति निजी रिश्तेदार के यहां तीन बार नहीं जाता है तो बातें बनने लगती है, जबकि इसका कोई औचित्य नहीं है। मृत्यु की बैठक में ज्यादा बार जाने से उस घर के लोगों को सारे सरंजाम जुटाने पड़ते है। अधिक से अधिक सुविधाएं और भोजन देना पड़ता है। सब एक जैसे नहीं होते, कोई उस कार्य को कर सकता है कोई नहीं। मेरी सोच के अनुसार, जाना तो चाहिए, पर एक बार और कम से कम सदस्य।

सूबेदार मेजर जगदीशदास स्वामी, हरियासर के विचार

मृत्यु बैठक का आयोजन मृतक के परिवार के प्रति सम्वेदना प्रकट करने के लिए अवश्य होनी चाहिए। परन्तु मृत्यु भोज को रोकने की बजाय आजकल 13 या 17 दिन मिलने वालों को विभिन्न प्रकार की मिठाइयां बनाकर खिलाई जाती है। यह केवल दिखावा है और समाज के लिए अनावश्यक भी। इसके अलावा ओढावणी की प्रथा तो बहुत बुरी है। इसे रिश्तेदारों में आपसी प्रतिस्पर्द्धा जागृत होती है तथा अंदर ही अंदर कटुता बढ़ती है। उपरोक्त दोनों परम्पराओं को रोकने का पुरजोर प्रयत्न किया जाना चाहिए। हमें अपनी सभी परम्पराओं पर नये शिरे से विचार करने करने की आवश्यकता है। किसी की देखादेखी नहीं करनी है।

भाषाओं का अनुवाद हो सकता है, पर भावनाओं का नहीं।
इन्हें समझना पड़ता है और समझाना भी पड़ता है।

राजकुमार स्वामी, निम्बी जोधा के विचार

मेरे विचार से मृत्यु बैठक में आनेवालों की संख्या कितनी हो, इसका निर्णय आप एवं हम नहीं ले सकते, बैठक में उस परिवार के रिश्तेदार एवं गांव के परिचितजन एवं मित्र आते हैं। जो व्यक्ति मिलनसार, समाज और गांव में अच्छे सम्पर्क एवं सम्बन्ध रखता है निश्चय ही उनके यहां आनेवालों की उपस्थिति अधिक होगी। व्यक्तियों से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है, इसलिए उनकी संख्या पर ध्यान नहीं देना चाहिए, पर हां जिन कुरीतियों को बढ़ावा मिल रहा है, उनमें सुधार की गुंजाइश है, इसके लिए हमें विचार करना चाहिए।

दिनेश स्वामी कड़वा, बीदासर के विचार

मृत्यु बैठक कोई गलत बात नहीं है, इसमें समाज के सभी लोग मिलकर गमगीन परिवार को सांत्वना प्रदान करते हैं, लेकिन मृत्युभोज से परिवार को जो आर्थिक नुकसान होता है, वह गलत है, इसे खत्म करना चाहिए। वह तभी संभव है, जब समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति आगे आकर समाज को जागरुक करे। मृत्यु बैठक को हमें ग्लैमराईज नहीं करना है, क्योंकि यह शोक-सम्वेदना से सम्बन्धित बैठक है।

दिनेशप्रसाद स्वामी, खानपुर, लाडनूं के विचार

मेरा मानना तो यह है कि चाहे व्यक्ति की मृत्यु पर कोई आये या न आये पर बीमार आदमी से मिलने अवश्य आना चाहिए और अगर परिवार निर्धन है तो इलाज के लिए आर्थिक मदद करनी चाहिए। बहुत से लोग आर्थिक रूप से टूटे हुए होते है, उनके लिए मृत्यु बैठक व औसर का खर्च बड़ा भारी दुखदाई होता है। मरे हुए व्यक्ति के घर पकवान खाना तो बड़ी बुरी बात है। धर्म करना है तो निराश्रित गायों की सेवा करो, और भी बहुत धर्म के साधन है। हमें अपने समाज की एक-एक कुरीतियों की तरफ संगठित होकर ध्यान देना होगा तथा उन कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रयासबद्ध भी होना पड़ेगा।

अर्जुनदास स्वामी, हरियासर के विचार

मृत्यु बैठक पर चर्चा हो रही है। हमारे समाज में मृत्यु बैठक में आनेवाले लोगों को आग्रहपूर्वक भोजन कराया जाता है और किसी उत्सव आयोजन की भांति मिठाइयां बनाकर खिलाई जाती है। सूतक तो होता ही है और उस घर में शोक का भी वातावरण होता है। लगभग हम सभी लोग वहां भोजन अरगते हैं। मेरे विचार से तेरहवां को गंगा प्रसादी होनी चाहिए, पर सूतक के समय तक भोजन न खाना चाहिए और न खिलाना चाहिए। यह फिजूल खर्ची है, इसे बंद किया जाना चाहिए। यह धार्मिकता और कर्मकाण्ड के हिसाब से अनुकूल नहीं है।

सलाह के सौ शब्दों से ज्यादा अनुभव की एक ठोकर इंसान को मजबूत बना देती है।

संत श्री सीतारामदास स्वामी परिव्राजक के विचार

मृत्यु बैठक का मुद्दा विचारणीय है। बैठक में कितने व्यक्ति आते हैं, इस संख्या का कोई निर्धारण नहीं हो सकता है और न ही प्रतिबंध जैसा कुछ लगाया जा सकता है। बुराई तो दिखावे से पैदा होती है। बिना काम कोई नहीं आता और बिना जरूरत कोई बुलाता नहीं। आना-बुलाना परिस्थितिजन्य है। पकवान भी परिस्थिति के अनुरूप ही बनते हैं। बैठक का आधार लोकाचार है, वह पहले से होती आई है, पर उसमें भोजन नहीं खिलाते थे। सूतक निकलने से पूर्व तो कोई उस घर का पानी भी नहीं पीता था। आजकल नई-नई चीजें जुड़ती जा रही है। हरेक व्यक्ति प्रशंसा का भूखा है, वह दिखावा कर अपनी चर्चा करवाना चाहता है। धार्मिक दृष्टिकोण से सूतक निकलने से पूर्व मृतक के घर का अन्न ग्रहण करना, अपने पुण्य को क्षीण करना है। जो समझदार और धार्मिक वृत्ति के लोग हैं, वे तो इसके लिए मना भी कर देते हैं। जो नहीं समझता, उसके लिए पाप-पुण्य में कोई खास अंतर नहीं रह जाता।

घनश्यामदास स्वामी, श्रीडूंगरगढ़ के विचार

मृत्यु बैठक पर उपस्थिति होनी चाहिए, लेकिन उसमें संख्या इतनी ना हो कि जिस घर में मृत्यु हुई है, उनकी तरफ से व्यवस्था कर पाना मुश्किल हो जाए। जिस घर में मृत्यु होती है।, उस घर का माहौल गमगीन होता है। उस दुख का अनुमान उपस्थित होने वाले जन नहीं लगा सकते। उस वेदना को मिटाना आवश्यक है। दुख को बंटाना होता है। दुख का वैसे इलाज समय के पास होता है। ज्यों ज्यों समय गुजरता जाता है, दुख स्वत: ही कम हो जाता है।

लेकिन आज जिस परिपाटी ने एक रिवाज का रूप ले लिया है, यह समाज के लिए घातक है। आर्थिक और मानसिक हानि जिस परिवार को हुई है, उसे और पीड़ा देना कहां तक जायज है। बैठक को तो मैं ठीक मानता हूँ, अगलों को हाथ जोड़े, संवेदना प्रकट की और चले आएं, यहां तक तो ठीक है, पर मनवार और वहां भोजन करना तो ठीक नहीं, यह तो विकृति है।

प्रकृति के...

■■■ पृष्ठ 14 से आगे

नगर की परिक्रमा के पश्चात् यहाँ लौटकर आते है। यहां से दर्शन करके लौटने पर एक संकरा रास्ता ऊपर से ही नीचे की ओर आता है। यह पहाड़ी जंगलो के बीच में है। ऐसे जंगल यद्यपि गलता में बहुत है पर यह रास्ता बड़ा विकट है क्योंकि सीढ़िया अव्यवस्थित सी है और यात्रियों को सावधानी से नीचे उतरना पड़ता है। नीचे उतरने पर हम ढाल पर चलते हुए नीचे पहुंच जाते है जहां से हम चढ़े थे।

गलता एक तीर्थ ही नहीं है वरन् प्रकृति सौन्दर्य का घर है। यहां गालव तीर्थ के ही दर्शन केवल न मिलते है वरन् बालाजी से भी साक्षात्कार होता है। कहते हैं कि महाराज जयसिंह द्वितीय के समय में राव कृपाराम द्वारा वर्तमान स्वरूप को प्राप्त गलता जयपुर से दो मील की दूरी पर पूर्व दिशा में कोई 350 फीट की ऊँचाई अब स्थित है। किसी समय यहां पर ही गालव ऋषि निवास करते थे। सम्भवत: यह स्थान गोमुख कुण्ड के ऊपर है। इस कुण्ड में 12 महिनों पानी पहाड़ियों में से आया करता है। गोमुख कुण्ड को प्रधानता देकर यहां सात कुण्ड है और कई एक सुन्दर मन्दिर हैं जिनमें से कुछ एक का उल्लेख पहले किया जा चुका है। चारों ओर पहाड़ियों से घिरा होने के कारण यह पवित्र स्थान दर्शनीय है। यों तो यहां वर्ष के सब दिन यात्री स्नानार्थ जाया करते हैं पर पर्व दिनों में यहाँ काफी भीड़ रहती है। धनावंशी सम्प्रदाय का इस तीर्थ से सीधा कोई सम्बन्ध नहीं है।

हर छोटा बदलाव एक बड़ी सफलता का हिस्सा है।

कैसी हो धनावंशीय भक्ति

■■■ चेतन स्वामी

हमारे सभी आर्ष ग्रंथों में भक्ति को भिन्न-भिन्न प्रकार से व्याख्यायित किया गया है। भक्ति शब्द की व्युत्पति भज धातु से हुई है। भज का अर्थ है भजना, भजन करना। भजन किसका करना? जो सर्वोच्च सत्ता है, जो सबका पालनहार है, जो सबका हेतु है-उस परमात्मा का करना। परमात्मा को भिन्न-भिन्न नामों से समझा गया है। भक्त के लिए वह भगवान है। योगी के लिए परमात्मा। वेदान्ती के लिए ब्रह्म। ज्ञानी के लिए ज्ञान स्वरूप। उस परमात्मा के नाम भिन्न हो सकते हैं, पर उन्हें एकीभाव से प्राप्त करने को भक्ति ही कहते हैं।

भक्ति का उद्भव, मनुष्य जितना ही प्राचीन है। इसको काल की सीमा में नहीं बांध सकते। परमात्मा की दिव्य शक्ति से परिचय प्राप्त करते ही, यह मनुष्य जान गया कि वह किसी परम सत्ता के अधीन है और उससे उपकृत है। वह उस परमोच्च सत्ता के उपकार को किसी प्रकार चुका नहीं सकता। वह केवल उस आत्मीय से प्रेम कर सकता है, उसके अनुग्रह से अभिभूत और विह्वल हो सकता है। भक्ति और कुछ नहीं भक्त का स्वभाव मात्र है, वह उसके स्वभाव से अभिव्यक्त होती है।

पूज्य शरणानंदजी महाराज की भक्ति विषयक बहुत उत्तम धारणा रही है। वे कहते हैं भक्ति उसी के प्रति की जा सकती है, जिनके होने में किंचित भी संदेह नहीं है। जिसकी सत्ता स्वीकार कर ली जाती है, उसके प्रति विश्वास अपने आप हो जाता है। जिसमें विश्वास हो गया, उससे नित्य सम्बन्ध स्वाभाविक है। स्वामीजी की भक्ति विषयक इस धारणा में एक शब्द आया है संदेह। परमात्मा के होने में भक्त कोई संदेह नहीं मानता और संदेह मानते हैं, जिनमें संशय रहता है, वे भक्ति करते भी कब हैं। दूसरी बात है सत्ता स्वीकार करने की और विश्वास की। परमात्मा की सत्ता से कौन अनभिज्ञ है? यह बात अलग है कि परमात्मा की ओर से कोई स्वमेव आंख मींच कर अंधेरा करे।

हमारे जीवन में भगवद् भक्ति उतरती क्यों नहीं? इसका संतों ने उत्तर दिया है कि जब तक व्यक्ति के जीवन में एक से अधिक की स्वीकृतियां हैं, उसके सामने अनेक विकल्प उपस्थित हैं, तब तक वह एक भगवान के ही शरणागत नहीं हो सकता।

भगवद् शरणागति बिना मन में संसार की उपस्थिति रहती है। अहम में मैं मेरा का भाव विद्यमान रहने से साधक की दृष्टि में भगवान के अलावा भी अनेक विकल्प मौजूद रहते हैं। वह प्रेम करने के लिए कभी किसी वस्तु-व्यक्ति का चयन करता है तो कभी किसी का। इसलिए संतों ने कहा अहं का नाश ही भेद और भिन्नता का नाश है? केवल एक की साधना का यही मूल मंत्र है।

भक्त की दृष्टि में सोते-जागते केवल भगवान की ही छवि रहती है। जिस नैनन में

जिसकी सत्ता स्वीकार कर ली जाती है, उसके प्रति विश्वास अपने आप हो जाता है। जिसमें विश्वास हो गया, उससे नित्य सम्बन्ध स्वाभाविक है। स्वामीजी की भक्ति विषयक इस धारणा में एक शब्द आया है संदेह। परमात्मा के होने में भक्त कोई संदेह नहीं मानता और संदेह मानते हैं, जिनमें संशय रहता है, वे भक्ति करते भी कब हैं। दूसरी बात है सत्ता स्वीकार करने की और विश्वास की। परमात्मा की सत्ता से कौन अनभिज्ञ है? यह बात अलग है कि परमात्मा की ओर से कोई स्वमेव आंख मींच कर अंधेरा करे।

जिम्मेदारियां रूई से भरे थैले की तरह होती है,
देखते रहेंगे तो बहुत भारी लगेगी और उठा लेंगे तो एकदम हल्की लगेगी।

प्रीतम बसे तो दूजो कहां समाय। भले ही गुण भेद से भक्ति के तीन प्रकार बताए गए हैं, जिन्हें सात्विकी, राजसी और तामसी कहा गया है। पर जब सात्विकी को ही उत्तम कहा गया तो बाकी दो भेद कहीं भटकानेवाले ही हैं। वे कहीं न कहीं निर्विकल्पता को बाधित ही करते हैं। भक्ति को व्याख्यायित करनेवाले अनुपम ग्रंथ नारदीय भक्ति सूत्र के अनुसार समस्त इन्द्रियों को माया के बंधन से सर्वथा मुक्त कर अनन्य भाव से भगवद् आराधन ही भक्ति है। श्रीमद् भागवत पुराण को भी भक्ति के निदर्शन का प्रमुख ग्रंथ माना जाता है। भागवत में उद्धव को भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

भक्तिं लब्धवत: साधो किमन्यदवशिष्यते।

अर्थात् – हे साधो! जिसको भक्ति की प्राप्ति हो गई, उसके लिए फिर शेष क्या रह गया? जिसको भक्ति का साधन प्राप्त हो गया। उसको अब दूसरे साधनों की तनिक भी जरुरत नहीं रह जाती। दूरे साधनों से लाभ भी क्या है? भक्ति में निमग्न साधक तो ज्ञान–वैराग्य की भी अधिक परवाह नहीं करना। भक्ति की स्थिति तुलसीदासजी महाराज के अनुसार–**सोवत सुख तुलसी, भरोसे इक राम के होनी चाहिए।** भक्त का आलम्ब केवल भगवान है। जो परमात्मा के भरोसे रहता है, वही भक्त है। अन्यथा तो समूची जिंदगी मनुष्य काल के व्याल से डरता भागता रहता है और इसी भय के बीच मृत्यु अपने कराल पंजों में दबोच लेती है। न स्वयं को समझ पाया और न ही सृष्टि रचयिता को।

भक्ति के संस्कार हृदय में दीपक की भांति प्रज्वलित रहे। वह ज्योतिर्मय ठाकुरजी, गुणातीत, निर्विकार, निर्विशेष, सत्तामात्र, अविनाशी सदैव हमारे साथ हैं। हमारे सारे उद्योग तो केवल अभ्यासवश हों।

देवकी, भगवान श्रीकृष्ण की माता होते हुए भी सद्य जन्मे हुए भगवान के चतुर्भुज रूप को देखकर कहती है–

रूपं यत् यत् प्रादुरव्यक्तमाद्यं ब्रह्म ज्योतिर्निगुणं निर्विकारम्।
सत्ता मात्रं निर्विशेषं निरीहं स त्वं साक्षाद् विष्णुरध्यात्म दीपः।।

हे प्रभु आप आंखों से दिखाई देनेवाले मात्र नहीं हो। आप तो अध्यात्म दीप साक्षात विष्णु हैं, जो सदैव ही गुणातीत, निर्विशेष और निरीह हैं। देवकी और वसुदेव दोनों जानते हैं कि भगवान लोक रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं।

उपनिषदों में भी उल्लेख है कि परमात्मा सत्तामात्र हैं। उनकी इस सत्ता को तत्त्वदर्शी लोग अनेक नामों से व्याख्यायित करते हैं। उपनिषदों में यह भी आया है कि हमारा हृदय परमात्मा का मंदिर है। भले ही परमात्मा कण–कण में विद्यमान हैं किन्तु उसके दर्शन भक्ति से सरोबार हृदय में ही संभव है। संसार के कपाट बंद करने पर हृदय के कपाट खुलते हैं। एक भगवान ही प्रिय लगे, बाकी सब वस्तुएं न प्रिय न अप्रिय की स्थिति में रहे तब भगवान के दर्शन होते हैं। परमात्मा को भक्ति रूपी नेत्रों से निहारा जा सकता है।

भक्ति क्षेत्र के अनेक मनीषी प्रभु प्राप्ति का रास्ता बता गए हैं। हम जानते हैं– धनाजी महाराज को पत्थर से बने शालिग्राम में पत्थर नहीं परमात्मा ही दीख रहे थे, इसलिए वे ब्राह्मण की बात पर किंचित भी अविश्वास नहीं कर पाए। ब्राह्मण ने कहा– ठाकुरजी की सेवा करना, इन्हें प्रतिदिन प्रीतिपूर्वक भोग लगाना। असंशय भाव से धनाजी ने इस बात की गांठ बांधली कि वे ब्राह्मण के बताए अनुसार ठाकुरजी की पूजा करेंगे और उन्हें नैवेद्य चढ़ायेंगे। एक दो दिन के निरंतर निवेदन को भगवान अस्वीकार कैसे करते। अंततः उन्हें निस्पृह भक्त के हाथों रोजाना चूरमें का प्रसाद प्राप्त करना पड़ा। वे उनके समझ साक्षात प्रकट होते और भक्त जो आदेश देता, उसका निर्वहन करते। भक्ति की कूंजी विश्वास है। पहले श्रद्धा होगी, फिर विश्वास प्रकटेगा। पूरे संसार को अपने वश में रखनेवाले परमात्मा एक अंकिचन भक्त के वश में हो जाते हैं, क्योंकि भगवान को भक्त और उसकी भक्ति सबसे प्रिय है। धनावंशी बंधुओं सदैव भक्तिपंथ का वरण करें।

हम जानते हैं–धनाजी महाराज को पत्थर से बने शालिग्राम में पत्थर नहीं परमात्मा ही दीख रहे थे, इसलिए वे ब्राह्मण की बात पर किंचित भी अविश्वास नहीं कर पाए। ब्राह्मण ने कहा– ठाकुरजी की सेवा करना, इन्हें प्रतिदिन प्रीतिपूर्वक भोग लगाना। असंशय भाव से धनाजी ने इस बात की गांठ बांधली कि वे ब्राह्मण के बताए अनुसार ठाकुरजी की पूजा करेंगे और उन्हें नैवेद्य चढ़ायेंगे। एक दो दिन के निरंतर निवेदन को भगवान अस्वीकार कैसे करते। अंततः उन्हें निस्पृह भक्त के हाथों रोजाना चूरमें का प्रसाद प्राप्त करना पड़ा। वे उनके समझ साक्षात प्रकट होते और भक्त जो आदेश देता, उसका निर्वहन करते। भक्ति की कूंजी विश्वास है।

संस्कार दिये बिना सुविधाएं देना पतन का कारण है।

वास्तु एक विवेचन

चक्र के समान भवन निर्माण नहीं करना चाहिए, ऐसे भवन में दरिद्रता आती है। घर चार कोने वाला ही बनाना चाहिए। तीन, पांच, छः, सात, आठ कोने वाले भवन अशुभ फलदायी होते हैं। गोमुखी भवन निवास के लिए तथा सिंह मुखी भवन व्यावसायिक कार्य के लिए शुभ होता है। नए मकान में पुरानी लकड़ी नहीं लगानी चाहिए।

भवन पूर्व व उत्तर में नीचा और पश्चिम व दक्षिण में ऊँचा होना चाहिए। ऐसा होने से गृह स्वामी की उन्नति होती है तथा सभी कामनाएं पूरी होती है। घर के चारों ओर तथा द्वार के सम्मुख व पीछे कुछ जमीन छोड़ देना शुभ फलदायी होता है। जिस भवन, देवालय, वाणिज्यिक स्थल, कल-कारखाने आदि में सूर्य की किरणे और वायु प्रवेश नहीं करती वह शुभ नहीं होता है।

एक दीवार से मिले हुए दो मकान नहीं बनाना चाहिए, इससे गृह स्वामी को कष्ट प्राप्त होता है। किसी मार्ग या गली-सड़क का अन्तिम मकान शुभ फलदायी नहीं होता है। पूर्व से पश्चिम की ओर आयताकार लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर से दक्षिण की ओर आयताकार लम्बा मकान चन्द्रवेधी कहलाता है। चन्द्रवेधी मकान शुभ फलदायी होता है। भवन का मध्य माग (ब्रह्म स्थान) हमेशा खाली रखना चाहिए। घर में टूटे बर्तन, टूटी खाट और कुत्ता नहीं रखना चाहिए। यह सब अशुभ फलदायी होते हैं। भवन वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए। आयताकार भवन की लम्बाई भवन की चौड़ाई के दोगुने से कम ही होनी चाहिए। चौड़ाई से दोगुनी या उससे अधिक लम्बाई गृह स्वामी के लिए विनाशकारक होती है। चक्र के समान भवन निर्माण नहीं करना चाहिए, ऐसे भवन में दरिद्रता आती है। घर चार कोने वाला ही बनाना चाहिए। तीन, पांच, छः, सात, आठ कोने वाले भवन अशुभ फलदायी होते हैं। गोमुखी भवन निवास के लिए तथा सिंह मुखी भवन व्यावसायिक काय; के लिए शुभ होता है। नए मकान में पुरानी लकड़ी नहीं लगानी चाहिए। एक मकान में उपयोग की गयी लकड़ी दूसरे मकान में लगाने से सम्पत्ति का नाश एवं अशान्ति की प्राप्ति होती है। ऐसे मकान में गृह स्वामी रह नहीं पाता। एक, दो या तीन प्रकार के काष्ठों से बनाया घर शुभ होता है। इससे अधिक प्रकार के काष्ठों से बनाया घर अनेक भय देने वाला होता है। बगीचा घर के पूर्व या उत्तर दिशा में बनाना चाहिए। अशोक, शमी, चम्पा, अर्जुन, कटहल, केतली, चमेली, नारियल, नागकेशर, जवा, महुवा, वट, सेमल, शाल, नीम आदि वृक्ष घर के पास शुभ होते हैं। पूर्व में बरगद, अग्निकोण में अनार, दक्षिण में गूलर, नैर्ऋत्य में इमली, जामुन, कदम्ब, पश्चिम में पीपल, वायव्य में बल, उत्तर में पाकर, ईशान में आँवला तथा ईशान-पूर्व में कटहल एवं आम वृक्ष शुभ फलदायक होते हैं, तथा वास्तुदोष को दूर करते हैं।

घर के पास काँटेवाले, दूध वाले वृक्ष नहीं लगाने चाहिए। घर के भीतर लगाई हुई तुलसी कल्याणकारिणी, धन-पुत्र प्रदान करने वाली, तथा पुण्य दायिनी होती है। मुख्य प्रवेश द्वार के सामने कोई वेध नहीं होना चाहिए। जैसे-मुख्य द्वार के सामने गली या सड़क, वृक्ष, जल प्रवाह, कुआं, मन्दिर, बिजली का खम्भा या किसी प्रकार का खम्भा, दीवार, दूसरे के घर का द्वार, गढ्ढा, चबूतरा आदि नहीं होना चाहिए। किसी भी द्वार के सामने बीम से भी द्वार वेध होता है। द्वार वेध यदि भवन की ऊंचाई से दोगुनी दूरी पर हो तो द्वार वेध का दोष नहीं लगता। मन्दिर, धर्मशाला, महल के सामने मार्गवेध हो तो दोष नहीं लगता।

कुआं, बोरिंग और भूमिगत पानी की टंकी पूर्व ईशान कोण या उत्तर में बनानी चाहिए, छत्त पर पानी की टंकी पश्चिम, वायव्य, दक्षिण या नैर्ऋत्य कोण में बनाना चाहिए। जल का प्रवाह पश्चिम से पूर्व की ओर तथा दक्षिण से उत्तर की ओर होना चाहिए। शयन कक्ष नैर्ऋत्य, दक्षिण तथा पश्चिम में बनाना चाहिए। रसोईघर, बिजली के उपकरण जनरेटर इत्यादि अग्निकोण में रखना चाहिए।

।।सोलह संस्कार।।

1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयन 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकर्म (मुन्डन) 9. विद्यारम्भ 10. कर्णवेध 11. उपनयन (यज्ञोपवीत) 12. वेदारम्भ 13. केशान्त 14. समावर्तन 15. पाणिग्रहण (विवाह) 16. अन्त्येष्टि

नोटों से भरी पेटियां और घर में बेटियां किस्मत वालों को नसीब होती है।

दहेज प्रथा : एक अभिशाप

छगन स्वामी, पाली

प्राचीन काल से ही मानव-समाज के विकास के साथ साथ उसमें अनेक प्रथाएँ जन्म लेती रही हैं । भिन्न-भिन्न समाज अथवा सम्प्रदायों ने अपनी सुविधा अनुसार प्रथाओं को जन्म दिया, लेकिन किसी भी समाज की प्रथा में उस समाज का हित विद्यमान रहता था । समय के साथ मानव हित में रीति-रिवाजों अथवा प्रथाओं में परिवर्तन भी होते रहे हैं । दहेज प्रथा समाज का कुष्ठ रोग है, सामूहिक प्रयास से ही इसे समाप्त किया जा सकता है। हमारे समाज में दहेज एक सामाजिक कलंक के रूप में विद्यमान है । यह एक थोपी गयी प्रथा के रूप में निरन्तर समाज का अहित कर रहा है । वास्तव में प्राचीन काल से ही हमारे देश में दहेज का एक प्रथा के रूप में जन्म नहीं हुआ । विवाह के अवसर पर वर-वधू को सगे-सम्बंधियों द्वारा भेंट देने की परम्परा अवश्य रही है । परन्तु भेंट देने की इस परम्परा में कोई विवशता नहीं होती थी । राजाओं, जमींदारों ने स्वेच्छा से दी जाने वाली इस भेंट को बढ़ा-चढ़ाकर दहेज के रूप में परिवर्तित कर दिया । उनके लिए बढ़-चढ़कर दहेज लेना-देना शान का विषय बन गया । बाद में उनकी देखा-देखी मध्यम और निम्न वर्ग के परिवारों में भी दहेज का प्रचलन बढ़ने लगा और एक स्वस्थ परम्परा समाज के लिए अभिशाप बनकर रह गयी । आज समाज में दहेज एक प्रथा के रूप में सामाजिक कलंक बना हुआ है । अमीर हो या गरीब, प्रत्येक वर्ग में दहेज की माँग की जाती है । धनाढ्य वर्ग को दहेज देने में कठिनाई नहीं होती । लेकिन एक मध्यम अथवा निम्न वर्ग का परिवार अपनी विवाह योग्य कन्या को देख-देखकर चिंतित होता रहता है । वास्तव में अपनी कन्या को स्वेच्छा से भेंट देने में किसी परिवार को आपत्ति नहीं होती, परन्तु कठिनाई तब होती है, जब वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष की आर्थिक स्थिति से अधिक दहेज की माँग की जाती है । अपनी कन्या के सुखद भविष्य की आशा में वधू पक्ष वर पक्ष की माँगों को पूर्ण करने का यथासम्भव प्रयत्न भी करता है । निस्संदेह इस प्रयास में वधू पक्ष को खून के आँसू रोने पड़ते हैं । परन्तु दहेज का दानव सरलता से सका पीछा नहीं छोड़ता । विवाह के उपरान्त भी अधिक दहेज की माँग की जाती है और इसके लिए वर पक्ष नवविवाहिता कन्या पर अत्याचार करने में भी संकोच नहीं करता । शर्मनाक स्थिति यह है कि दहेज के लिए मासूम कन्याओं को वर पक्ष द्वारा जलाकर मारा जा रहा है । प्रताड़ित किया जाता है। अपशब्द बोले जाते हैं । बेबस कन्याएँ इस थोपी गयी प्रथा के लिए बलि चढ़ रही हैं । इस दिशा में हमारे समाज की युवा पीढ़ी महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकती है । दहेज के दानव से पीछा छुड़ाने के लिए हर युवा को प्रयत्न करना चाहिए।

समाज के सभी प्रतिभावानों, सामर्थवानों, विभूतिवानों, तथा एक अच्छे समाज की कल्पना करने वालों सभी सज्जनों से मेरा नम्र निवेदन है कि समाज की एकता और अखंडता के लिए आप लोग हमेशा पॉजिटिव चिंतन कीजिए। हमेशा सोचते रहिए हमारा समाज बदलेगा, हमारा समाज बदलेगा, भूल के भी कभी मत सोचिए कि हमारा समाज नहीं बदलेगा। क्योंकि विचार एक अग्नि समान है। आज तक किसी भी देश ,समाज ,और राष्ट्र का अगर परिवर्तन हुआ है तो विचारों यानी क्रांति के कारण हुआ है । आइए हम सभी मिलकर समाज की इस कू- प्रथा को समाप्त करने का मन ही मन सभी लोग विचार बनाते रहें और इसे क्रांति रूप देने वाले समाज बंधुओं का सहयोग करते रहें, ऐसे विचारवानों की संख्या जिस दिन अपने समाज में बढ़ने लगेगी वह दिन दूर नहीं जब ये सारी कू-प्रथाएं समाप्त हो जाएगी।

बंधुओं, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वगैर समाज के सहयोग से इस प्राणी का कुछ भी भला होने वाला नहीं है। पूरा समाज एक दूसरे के सहयोग पर आश्रित है, पर समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने के लिए संगठन की आवश्यकता होती किसी भी सामाजिक बुराई को कोई भी अकेला व्यक्ति समाप्त नहीं कर सकता। किसी भी संगठन को चलाने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है। तन मन और धन। मन और तन है पर धन नहीं तो संगठन लड़खड़ा जाएगा। धन और तन है फिर भी संगठन नहीं चलेगा। क्योंकि मन को भी उसके साथ लगाना ही पड़ेगा। यानी तीन चीजों में एक दूसरे के सहयोग के बिना दुनिया का कोई भी संगठन अधूरा ही रहेगा। यह एक दूसरे का पूरक है। आइए बनाएं हम दहेज विरोधी धनावंशी समाज।

मार्गदर्शन सही हो तो एक सा छोटा सा दीपक भी सूरज से कम नहीं होता।

कालचक्र

मांगीलाल स्वामी (कड़वा) नया बास, सुजानगढ़

हर घटना को समय करता है फिर भी समय चलता रहता है। भारत के दार्शनिक ओशो ने कहा है मनुष्य समय में जीता है अर्थात यह दुनिया समय से चल रही है। जब हम इस समय में जी रहे है। दुनियां में है और हमें ईश्वर की तरफ जाना है तो समय के विपरीत जाना होगा। समय के विपरीत समाधि है।

समय का पहिया निरन्तर चलता है। हमारे संतों ने इसे कालचक्र कहा है। संत कबीर कहते है तेरे सिर पर घूमे काल लोभ ने तज रे, तेरी उमर बीति जाय राम ने भज रे। समय को ही काल कहते है। जन्म-मरण, भाग्य ये सब समय का खेल है। इसने राम को देखा है, कृष्ण को देखा है। सचाई यही है कि समय वो नियंता है जो सब करता है फिर भी रहता है।

समय सबके साथ गतिशील है चाहे वो ब्रह्मा, विष्णु और महेश ही क्यों न हो। ऐसा कोई भी नहीं है जिस पर समय की मार न पड़ी हो। रावण व हिरण्यकश्यप जैसे महारथी भी इस कालचक्र में मिट गये। कहते है ना-

कठै गया वे लोग दिन भर धरती तोतणिया।
जांकी पड़ती धाक, नहीं कोई सामा बोलणिया।।

समय किसी को राजा बनाता है किसी को भिखारी। कल हम प्रसन्न थे आज हम दुःखी है। हमसे यदि अनाज गिर जाय तो हम कहते है अनाज व्यर्थ नष्ट कर दिया, परन्तु हम समय नष्ट कर रहे है ये हमको दिखाई नहीं दे रहा है या फिर हम जान-बूझकर इससे मुँह फेर लेते हैं। समय के चक्र में हम फंसे हैं। हरिश्चंद्र, विक्रमादित्य जैसे राजा भी इस समय के चक्र से नहीं बच पाये।

जब हम जन्म लेते है तब हम मृत्यु भी ले लेते हैं। जन्म के साथ ही पल पल मृत्यु की तरफ जाना शुरु कर देते है। हमें सब मालूम होते हुए भी हम समय खोते जा रहे है। बैठे-बैठे ताश खेलना, आवारा गर्दी करना सब समय की बर्बादी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ईश्वर ने हमें यहां अतिथि बनाकर भेजा है। जीवन का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना है और उसके दो ही मार्ग है एक भक्ति मार्ग व दूसरा ज्ञान मार्ग, जो हमें सरल लगे उसे चुन लेना चाहिए।

दुनियां को जीतने वाला सिकन्दर बीमार पड़ गया। उसके चिकित्सकों ने बोला अब हमारे बस में कुछ भी नहीं है। सिकन्दर बोला मेरी सम्पदा ले लो व मुझे कुछ समय के लिए बचा लो। चिकित्सकों ने कहा दुनियां की सारी सम्पदा भी अब कोई काम न आयेगी। सिकन्दर ने कहा मेरे मरने के बाद मेरे जनाजे में कफन से मेरे दोनों हाथ बाहर निकाल देना ताकि दुनियां यह देखें कि सिकन्दर खाली हाथ जा रहा है। यह सब कालचक्र का खेल है।

ओलम्पिक में जब कोई धावक दौड़ता है तब वह जानता है कि समय की क्या अहमियत है। सैकण्ड का सौवां भाग भी उसे जीतने से रोक सकता है। अर्जुन जैसा महारथी वीर जिसके धनुष की टंकार से बड़े-बड़े योद्धा दहल जाते थे, वह भी समय के चक्र में ऐसा फंसा कि आदिवासी भील उसे लूटकर ले गये।

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।
काबा लूटी गोपजा, वो ही अर्जुन वे ही बान।।

हम विषयों को त्यागकर ईश्वर की तरफ मन लगाएं, यह ही समय का सदुपयोग है। इस कालचक्र के नियंता भगवान सूर्य नारायण को नमन।

समस्या का अंतिम हल माफी ही है, कर दो या मांग लो।

आपके पत्र–आपकी भावनाएं

श्री धनावंशी पत्रिका का दूसरा अंक मिला। पढ़कर बहुत अच्छा लगा। अट्टा–सट्टा पर आपके विचार बहुत अच्छे है। अगर हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा–संस्कार देंगे तो रिश्तों की कोई कमी नहीं है। आपका एक बार पुन: अभिनन्दन, इस सामाजिक कार्य के लिए।

-भंवरलाल वैष्णव, दोतीणा (हाल-जयपुर)

श्री धनावंशी हित पत्रिका का दूसरा अंक पढ़कर बहुत आनंद प्राप्त हुआ। पत्रिका के समाचारों में बिना दहेज पुत्र विवाह करने वाले जयवीरजी के प्रति आभार तथा दुर्घटनाग्रस्त परिवार के लिए मदद की गुहार, ये बातें समाज को नई राह और परस्पर जोड़ने का काम करने वाली हैं। बहुत अच्छा लगा कि हमारी पत्रिका में एक ऐसे परिवार का जिक्र हुआ जो बहुत दयनीय स्थिति में है, मैं अपनी तरफ से भी अनुरोध करता हूं कि बस पिकअप की भिड़ंत में दिवंगत हुए इन्द्रदास, सोमासर की मदद के लिए सम्पूर्ण धनावंशी स्वामी समाज आगे आए और इस परिवार की मदद करे।

पत्रिका में धनावंश और विष्णु तत्त्व, डॉ. उमेश का धनावंशी महिलाओं की स्थिति का आलेख विचारणीय है। श्रीमती डॉ. उमेश को बधाई। वैष्णव कौन? लेख का धनावंशी वैष्णवों को अनुकरण करना चाहिए। अष्टावक्र गीता पर मांगीलालजी कड़वा का लेख ज्ञानवर्धक है। स्व. सूरजमलजी स्वामी के जीवन सार को पढ़कर गर्व महसूस हुआ, हमारे धनावंशी समाज में ऐसे हितकारी गृहस्थ महात्मा ने जन्म लिया। मैं पुण्य आत्मा को नमन करता हूं। वैवाहिक अट्टा–सट्टा सचमुच में समाज के लिए घातक है। धनावंश की सभी बात लेख में चेतनजी ने सत्य को सबके सामने रखा है। सुंदर जानकारियों एवं ज्ञान से युक्त अंक को पाकर मेरे ज्ञानकोष में वृद्धि हुई है। यह पत्रिका हर धनावंशी परिवार में पहुंचे तो समाज को एक नई दिशा मिले।

-घनश्यामदास स्वामी, श्रीडूंगरगढ़

आज पत्रिका प्राप्त हुई। अट्टा–सट्टा पर परिचर्चा वाला लेख बहुत उपयोगी लगा। पत्रिका समाज में आपसी जुड़ाव बढ़ायेगी, इससे समाज में फैली अनेक बुराइयों का अंत होगा।

-सुखदेव स्वामी, कल्याणसर

आज आपके द्वारा भेजी गई मासिक पत्रिका का दूसरा अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के कुछ अंश पढ़कर ऐसा महसूस हुआ कि समाज की व्यवस्था के लिए यह पत्रिका एक स्तम्भ का कार्य करती है और साफ–सुथरा वातावरण तैयार करने में एक अमोघ अस्त्र का काम कर रही है।

-छगनलाल स्वामी, पाली-मारवाड़

श्री धनावंशी हित पत्रिका के दूसरे अंक की 50 प्रतियां प्राप्त हुई। पढ़कर मन में अपार खुशी हुई। पत्रिका के माध्यम से समाज में एक–दूसरे के विचारों का आदान–प्रदान हो रहा है। धनावंश के सम्बन्ध में जानकारियां सबको प्राप्त होगी, तभी समाज एकता के सूत्र में बंधेगा। समाज हितेषी कार्य के लिए तहेदिल से धन्यवाद। आभार।

-प्रेमदास स्वामी, खिंवाला, नागौर

श्री धनावंशी हित पत्रिका का दूसरा अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर हृदय में गदगद हुआ। पत्रिका का बेसब्री से इंतजार रहता है।

किसी को चुप करना है तो अपनी सफलता से कराओ, बहस तो आजकल हर कोई कर लेता है।

जब पढ़ लेते हैं तो मन में प्रसन्नता होती है। आज हमारा समाज इस पत्रिका के माध्यम से एकसूत्र से बंधा है। मैं पुन: आभार प्रकट करता हूँ। आप हमेशा धनावंशी हित के कार्य करते रहें।

-बस्तीराम गोरा (स्वामी), मेड़तासिटी, नागौर

श्री धनावंशी हित पत्रिका का दूसरा अंक भी करीब आठ–साढ़े आठ सौ सदस्यों की संख्या के पास पहुंच गया होगा। जो धनावंशी बंधु धनावंश के आदिगुरु के रूप में श्री धनाजी महाराज का नाम लगाने में विरोध करते हैं, उनसे निवेदन है कि वे धनावंश शब्द का अर्थ बताएं, आपकी भी चेतनदास के बराबर ही जिम्मेदारी है। समाज का सहयोग व मार्गदर्शन करने में सभी का बराबर हक है। समाज की सबाई, एकता को लुप्त करना अन्याय है। बिना किसी तथ्य के विरोध करना समाज के साथ खिलवाड़ है, इससे समाज की बदनामी होती है। समझदार व्यक्ति का यह कार्य नहीं होता। चेतनदासजी ने अध्ययन कर जगह–जगह से खोजकर सब प्रकार की जानकारी तथ्यों सहित समाज के सामने समर्पित की है जबकि उनकी समाज प्रेमी भावना का विरोध करनेवालों ने कुछ भी करके नहीं दिखाया। हम सब चेतनदासजी के बहुत आभारी हैं। आपके पास कोई जानकारी है तो समाज के सामने रखें। सब से पूछताछ की जाती है तो वह गोड़ा घड़ंत प्रमाण तो रखता है तीन हजार वर्षो का और जब बताने लगता है तो आ जाता है रामानंदजी के बाद। रामानंदजी के बाद तो उनके शिष्य धनाजी, हुए ही थे, उनके सभी अनुयायी धनावंशी कहलाए, इसमें अनोखा क्या है? धनाजी महाराज को स्वीकार न करने में तीन कारण हो सकते हैं। नाजायज स्वार्थ, झूठा अभिमान या बिना कारण क्रोध।

-सीतारामदास परिव्राजक, गुसांईसर बड़ा

श्री धनावंशी हित पत्रिका का दूसरा अंक पढ़कर सुखद आश्चर्य की अनुभूति हुई। चेतनजी आप इस पत्रिका के प्रति चेतन ही नहीं अपितु सचेतन प्रतीत हुए। विलुप्त ज्ञान के प्रति इतना लगाव बिरलों को ही रहता है। उक्त क्रियाशीलता के लिए आपको धन्यवाद देने का कार्य हल्का पड़ेगा। इसलिए कामायाब महाकाव्य की निम्न पंक्तियां समीचीन होगी–

सर नीचा कर जिसकी सत्ता, सब करते स्वीकार यहां।
सदा मौन ही प्रवचन करते, जिसका है अस्तित्व कहाँ?
स्वामीजी
एक कदम आगे की ओर
चेतना के उच्च शिखर पर चढ़कर यह एलान करो,
कि खोये हुए ज्ञान के प्रति अपनेपन का उद्घोष करो।

पूषाराम साथ, प्रधानाचार्य, कोलिवा (नागौर)

हमारे महंत यदि समाज के प्रति संवेदनशील होते तो धन्नावंश की स्थिति कुछ और होती। आप धन्नावंश की उत्पत्ति के सम्बंध में जो तथ्य प्रस्तुत करते हो वो उनके रुढिवादी विचारों से मेल नहीं खाते है। तो वो लोग ये पत्रिका क्यों पढेंगे? कुछ लोग तो अपने आप को ब्राह्मण घोषित कर रहे हैं ।

अमेरिका में एक गोरा आदमी अफ्रीकी लोगों का मज़ाक उड़ाया करता था लेकिन जब उसने अपना डीएनए का विश्लेषण करवाया तो वह यह जानकर चौंक गया कि उसके पूर्वज अफ्रीकी मूल के थे। कुछ ऐसा ही हमारे समाज के लोगों के साथ भी हो रहा है। जो लोग जाटों से ईर्ष्या करते थे वो यह कैसे मान लेंगे कि हम जाटों में से निकले हैं। किसी भी विषय पर जब एक बार मनोवृत्ति बन जाती हैं तो उसमें बदलाव करना आसान काम नही है ।

पुखराज स्वामी, राठील

अगर किस्मत आजमाते आजमाते थक गये हो तो कभी खुद को आजमाइये, नतीजे बेहतर होंगे।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबासदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) ⁎ मो.: 9461037562**

शोक–सम्वेदना

आसोप तहसील भोपालगढ़ (जोधपुर) के पूज्य महंत परसरामजी खदाव (धनावंशी) देवलोकगमन माघ बदी चतुर्थी वार मंगलवार, दिनांक 14 जनवरी 2020 को हो गया। श्री ठाकुरजी उन्हें अपने चरणों में स्थान देवें। श्री धनावंशी हित पत्रिका परिवार इनके परिजनों के प्रति सम्वेदना व्यक्त करता है।

●●●●●

जोधपुर। भगवान के परम भक्त श्री जेठूदासजी भंवरिया, धनावंशी का देहावसान, शास्त्री नगर–जोधपुर में 13 जनवरी 2020 को हो गया। भगवान उन्हें अपने श्रीचरणों में जगह प्रदान करें। भंवरिया परिवार को प्रभु दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। श्री धनावंशी हित पत्रिका परिवार हार्दिक सम्वेदना व्यक्त करता है।

●●●●●

झूमियांवाली पंजाब के स्व. श्री गजानन्दजी सियाग धनावंशी की धर्मपत्नी श्रीमती रूक्मादेवी का निधन 11 जनवरी 2020 को हो गया। श्री ठाकुरजी दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देवें तथा उनके सुपुत्र श्री रामकुमार सियाग तथा पौत्रगण सहित समूचे परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। श्री धनावंशी हित परिवार अपनी सम्वेदना प्रकट करता है।

●●●●●

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

समय सबसे ज्यादा बलवान होता है।
खट्टी कैरी को भी मीठा आम बना देता है।

श्री धनावंशी स्वामी समाज के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं

तुलसी नर का क्या बड़ा
समय बड़ा बलवान

परिव्राजक संत सीतारामदासजी
गुसांईसर बड़ा

"तुलसी नर का क्या बड़ा
समय बड़ा बलवान"

SHREE MURLIDHAR™ GROUP

Trade Mark No.: 4256434

VINOD BHAI
Sales Department
88245 08949
94687 54543

BIRJU SWAMI
9427 9427 28
8000 9427 28
SOHANLAL GODARA
97245 08596

SHREE MURLIDHAR FABRICS
Traditional & Multi Purpose Fabrics

G-730 TO 735, Radha Raman Textile Market, Near Bharat Cancer Hospital, Saroli, Surat-395 010. E-mail : birjubhaisurat@gmail.com

Birju Swami
9427 9427 28
M.: 8000 9427 28

Radheshyam
M.:97242 33151
Subhash
M.:80001 62874

SHREE MURLIDHAR CREATION
All Type Lace Cutting, Pasting and Fitting Work

166, Narayan Nagar, Nr. Maharana Pratap Chowk, Godadara, Surat-395 010. E-mail : birjubhaisurat@gmail.com

BIRJU SWAMI
9427 9427 28
8000 9427 28
RAMCHANDRA KHATI
93277 93836

SHREE MURLIDHAR COTTON DEPO
Traditional & Multi Purpose Fabrics

D-2116-17, Radha Raman Textile Market, Near Bharat Cancer Hospital, Saroli, Surat-395 010. E-mail : birjubhaisurat@gmail.com

Ganpat Swami
93286 27010

Phoosdas Swami
93283 53036
95371 44319

Shiv Pooja
TEX-PRINTS
A House of Fancy Sarees

C-3249-50, 1st Floor, Raghukul Textile Market, Ring Road, SURAT.
E-mail : shivpoojatexprints@gmail.com

Jagdish Swami M.: 7600011931, 9252111931
Bhagwan Bhai M.: 9374909563
0261-2459301
2459302
2451485

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

जगदीश स्वामी
कल्याणसर (बीदासर)

MC

MAHADEV CANVASSING

Canvassing Agent

Maize, Food Grain, Pulses, Oil Cacks, Chuni, Rice Etc.

B-232, Gajjar Chambers, Falsawadi, Ring Road, Surat-2

गणपतदास स्वामी M.: 9929464344

राज. उ. प्रा. विद्यालय के सामने, पो. कल्याणसर, तह. बीदासर (चूरू)

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।